ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः
राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक–
वेद, यज्ञ–योग–साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

जून 2018

मूल्य 15 रू.

आत्म–शुद्धि–पथ

मासिक

सात दिवसीय चरित्र निर्माण संस्कार शिविर सम्पन्न

मुख्य अतिथि महंत प्रदीप जी महाराज, महाबल धाम, कालियावास को सम्मानित करते हुए आश्रम के अधिकारीगण।
एस.एच.ओ. श्री कर्ण सिंह जी को सम्मानित करते हुए आश्रम के अधिकारीगण तथा ट्रस्टीगण।
प्रेस रिपोटर श्री नरेश शर्मा जी, श्री कृष्ण सांवरवाल जी, श्री मोनू यादव जी को फुल मालाओं से सम्मानित करते हुए स्वामी धर्ममुनि जी, वानप्रस्थी विश्वमुनि जी, आचार्य चांद सिंह एवम् स्वामी सचिदानन्द जी।
महंत निर्माणपुरी फर्रूखनगर गौशाला को सम्मानित करते हुए अधिकारी आचार्य एवम ट्रस्टीगण।

(विवरण पृष्ठ 4 पर)

आर्य समाज के संस्थापक, वेदों के उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

कर्नल रविन्द्र कुमार चड्डा एवम् श्रीमती रीटा चड्डा संरक्षक सदस्य बनें

कर्नल रविन्द्र कुमार जी चड्डा का जन्म पंजाब के होशियारपुर तहसील में 19 मई 1950 को हुआ था। इनके पिता श्री धर्मवीर जी और माता राजरानी की आर्य समाज में शुरु से बहुत लगन थी। आर्य परिवार में पड़े बड़े होने के कारण इनके व्यक्तित्व व कृतृत्व पर विशेष प्रभाव रहा। इन्होने इंजीनिरिंग करने के बाद सन् 1973 में आर्मी जॉइन की। आर्मी से 31 वर्ष उपरान्त 2004 में सेवानिवृत हुए। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती रीटा चड्डा सनातनी विचारधारा की थी। मगर शादी के बाद आर्य माहोल में आकर इन्होने अपने आपको आर्य विचारधारा में ढाल लिया। इनकी एक बेटी पुजा द्वारका में अध्यापिका है और सेहरा परिवार में व्याही हुई है। लड़का सिद्धार्थ एम.एन.सी. में और पुत्रवधू एम.एन.सी. बैंक में नौकरी करती है।

आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य बने डॉ. सूरजमल दहिया

आदर्श व्यक्तित्व के धनी डॉ. सूरजमल दहिया

डॉ. सूरजमल दहिया

डॉ. सूरजमल जी दहिया का जन्म चौ. लच्छीराम जी गांव किडोली, पहलादपुर जिला सोनीपत के घर 20 मई, 1939 को माता श्रीमती धनकोर की कोख से हुआ। आपके ताऊ प्रसिद्ध आर्यसमाजी डॉ. चन्द्रभान जी जो जिला बोर्ड के सदस्य और वैदिक भक्ति साधना आश्रम आर्य नगर के भूमि दानदाता थे। इनके आदर्शो का डॉ. सूरजमल के व्यक्तित्व व कृतृत्व पर विशेष प्रभाव रहा। डॉ. सूरजमल ने पशु चिकत्सक के रूप में दिल्ली सरकार में 38 वर्षो की सेवा उपरान्त निर्देशक के उच्च पद से सेवानिवृत हुये। 2 वर्ष तक आप दिल्ली सरकार में पशु पालन विभाग में निदेशक सलाहकार के रूप में रहे। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती इन्द्रा देवी भी आर्य विचारधारा वाली महिला है और आत्मशुद्धि पथ पत्रिका की आजीवन सदस्या हैं। अच्छा संस्कारित परिवार है। तीनों बेटे और एक बेटी बड़ा बेटा रवि प्रकाश रक्षा मंत्रालय में कर्नल, दूसरा बेटा विनोद कुमार केन्द्र सरकार में निर्देशक व तीसरा बेटा डॉ. अनिल जी मोदी युनिवर्सिटी राजस्थान में प्रो. हैं। बेटी डॉ. सुनीता हरियाणा के प्रतिष्ठित कुन्डु परिवार में ब्याही हुई है। आत्मशुद्धि परिवार ऐसे आर्य परिवार की सुख-समृद्धि की मंगल कामना करता है।

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

द्वि.ज्येष्ठ-आषाढ़ सम्वत् 2075 जून 2018

सृष्टि सं. 1972949119 दयानन्दाब्द 194

वर्ष-17) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-06

(वर्ष 48 अंक 06)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

मो. 9416054195

❖

सह सम्पादकः

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)

❖

परामर्श दाताः गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(08053403508)

❖

उपकार्यालय

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
15 वर्ष के लिए	: 1500 रुपये
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर.

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
समाचार	4
उषा का आह्वान	7
परमात्मा की प्राप्ति सत्संग से	8
वह प्रभु महान सुपार तथा यज्ञशीलों के मित्र हैं	10
प्रभु भक्ति और उषा	12
ईश्वर की अवधारणा	13
महारानी द्रौपदी	15
जाति सम्प्रदाय से बढ़ रहे क्लेश	17
सात दिवसीय योगासन-प्राणायाम एवम् चरित्र निर्माण...	19
परिवार में बुजुर्ग व्यक्ति की आवश्यकता	21
टिप्पा-टिप्पा टिप्स	23
साहस करें दुःसाहस नहीं	24
हंसो और हंसाओ	25
मानव एवं समाज के लिए घातक अन्धविश्वास	26
ऋषिभक्त, देशभक्त और आर्यसमाज भक्त शहीद......	30
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

सात दिवसीय योगासन-प्राणायाम-व्यायाम एवम् चरित्र निर्माण संस्कार शिविर सम्पन्न

राष्ट्र धर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद-यज्ञ-योग साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ की फर्रूखनगर शाखा में स्वामी धर्ममुनि जी के आशीर्वाद से स्वामी सच्चिदानन्द ने 28 मई से 3 जून तक सात दिवसीय योगासन-प्राणायाम-व्यायाम एवं चरित्र निर्माण संस्कार शिविर आयोजित किया। शिविर का उद्घाटन 28 मई की शाम को किया गया। शिविर के उद्घाटन पर श्री कन्हैयालाल जी आर्य (उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा) व श्री राजवीर जी आर्य महामन्त्री गुरुकुल झज्जर ने आर्यवीरों को प्रेरणात्मक उद्बोधन दिया। शिविर में लगभग 60 आर्यवीरों ने भाग लिया। जिसमें से 42 आर्यवीरों ने अंत तक शिविर का लाभ प्राप्त किया। शिविर में आचार्य चांदसिंह जी व व्यायाम शिक्षक श्री राजकिशोर शास्त्री ने आर्यवीरों के साथ खुब मेहनत की। उन्हें व्यायाम के साथ-साथ भारतीय वैदिक विचारों व संस्कारों से भी अवगत कराया। शिविराध्यक्ष स्वामी विश्वमुनि ने भी आर्यवीरों को बौद्धिक ज्ञान दिया।

शिविर का समापन 3 जून को प्रात: 8 बजे से 1 बजे तक भव्य समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रदीप जी महाराज महाबल धाम कालियावास रहे। शिविर के समापन समारोह में आर्यवीरों ने अपने सात दिन के अभ्यास से प्राप्त ज्ञान का भव्य प्रदर्शन कर आए हुए सज्जनों का मन मोह लिया। शिविर में जोगेन्द्र (सरपंच बाढ़सा), विरेन्द्र दौलताबाद, प्रदीप जी महाराज, विकास यादव जोनियावास, रायसिंह (कोमल टैण्ट हाऊस), राजवीर, विक्रम आर्य, प्रवीण आर्य, अधिवक्ता संदीप, हितेश गुलिया (सरपंच याकूबपुर), महाशय लेखराम जी, आदि का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर स्वामी सच्चिदानन्द ने कहा कि अज्ञान, अन्याय प्रभाव, पाखण्ड, नशा व रोग मुक्त स्वस्थ, समृद्ध, संस्कारवान, योग मुक्त दिव्य ताज निर्माण हेतु आने वाले समय में निरंतर ऐसे शिविरों का आयोजन होता रहेगा। अंत में स्वामी, धर्ममुनि जी ने सबको आशीर्वाद व भविष्य के आर्यवीरों के लिए शुभकामनाएं दी।

सत्यार्थ प्रकाश देकर बेटीयों को किया सम्मानित

वैदिक सत्संग मण्डल समिति झज्जर के तत्वाधान में बेटी बचाओ अभियान व्याख्यानमालाके तहत 64वां कार्यक्रम राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गर्ल भदानी में आयोजित किया गया जिसमें यज्ञ व व्याख्यान का आयोजन किया गया। यज्ञ के यजमान डॉ. राजेन्द्र प्राचार्य रहे, यज्ञ की ब्रह्मा कुमारी पूनम व प्रवेश आर्या राष्ट्रीय अध्यक्ष व संयोजक बेटी बचाओ अभियान रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता पं. रमेश चन्द्र वैदिक ने की व मंच का संचालन कवि महेन्द्र द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता कुमारी पूनम आर्या ने कहा कि महिलाओं के साथ दुष्कर्म करने वालों के ख़िलाफ केवल सख्त क़ानून बनाना ही प्रर्याप्त नहीं है समाज की सोच बदलना भी जरूरी है और कानून के साथ-साथ तवरित कार्य भी जरूरी है, देरी के कारण दोषियों को सजा नहीं मिल पाती है। कुमारी प्रवेश आर्या ने कहा कि विद्यार्थियों को छुट्टियों में व बरसात के मौसम में वृक्ष अवश्य लगाने चाहिए जो कि पर्यावरण शुद्धि के लिए आवश्यक हैं। पं. रमेश चन्द वैदिक ने कहा कि विद्यार्थियों को नशे से दुर रहने की शिक्षा अब दी जानी चाहिए। मेधावी बेटीयों को सत्यार्थ प्रकाश व व्यवहारभानू पुस्तक देकर सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम में स्कूल स्टाफ व छात्राएं शामिल रही। विद्यालय की छात्राओं ने भी कन्या भ्रूण हत्या के विरूद्ध व पर्यावरण संबंधित सुन्दर गीत/कविताएं भी प्रस्तुत की।

– पं. रमेश चन्द्र वैदिक

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें ओ३म् आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें

राष्ट्र, धर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद, यज्ञ, योग साधना केन्द्र
आत्मशुद्धि आश्रम की ज्ञानगंगा में स्नान हेतु सात दिवसीय पावन ऊर्जामय

निःशुल्क योग आसन व्यायाम प्राणायाम स्वास्थ्य सुधार शिविर

एवम्

ऋग्वेद से बृहद् यज्ञ

सोमवार 25 जून से रविवार 01 जुलाई 2018 तक

सानिध्यः- स्वामी धर्ममुनि जी महाराज (मुख्यअधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़)

योग शिक्षक एवम् यज्ञ ब्रह्माः-आचार्य शिवनारायण जी शास्त्री, (रोहिणी दिल्ली)

वेदपाठीः-आचार्य रविशास्त्री एवम् ब्रह्मचारी ध्रुव शास्त्री, (आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़)

इस अवसर पर अनेकों प्रसिद्ध प्रवक्ता एवम् विद्वान्, संन्यासी आमंन्त्रित किए गए हैं। भजनों का कार्यक्रम भी प्रभावशाली रहेगा।

दिनचर्याः सोमवार 25 जून 2018 को शिविर उद्घाटन सांय 4 बजे। मंगलवार 26 जून 2018 प्रातः 5 से 6.30 बजे तक आसन व्यायाम प्राणायाम अभ्यास, 7:00 बजे से 9 बजे तक यज्ञ भजन उपदेश, सायं 5 बजे से 7 बजे तक यज्ञ भजन उपदेश, रात्रि मल्टीमीडिया हॉल में धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन।

नोट- -शिविर मध्य महिलाए भी भाग ले सकती हैं। ❑ शिविरार्थी अपना आवश्यक सामान ऋतु अनुसार बिस्तर आदि साथ लेकर आएं। ❑ भोजन, आवास की व्यवस्था आश्रम की ओर से निःशुल्क रहेगी। ❑ शिविरार्थी आने से पूर्व सूचित अवश्य करें। आश्रम दिल्ली रोड पर बस स्टैण्ड के निकट, मेट्रो पीलर नम्बर 819 है।

संयोजकः
राजवीर आर्य, मो. 9811778655

निवेदक

सत्यानन्द आर्य
प्रधान ट्रस्ट, 9313923155

दर्शन कुमार अग्निहोत्री
मन्त्री ट्रस्ट, 9810033799

सत्यपाल वत्सार्य
उपमन्त्री ट्रस्ट, 9416055359

कन्हैयालाल आर्य
उपप्रधान ट्रस्ट, 9911197073

विक्रमदेव शास्त्री
व्यवस्थापक आश्रम, 9896578062

आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ (पंजीकृत) जिला झज्जर, हरियाणा-124507, सम्पर्क सूत्र-9416054195

चौ. लखीराम आर्य अनाथालय के बालकों ने झटके 53 मैडल

टारगेट रिपब्लिक ऐसियाड गेम्स इंडिया (रजि) द्वारा आयोजित ब्लॉक स्तरीय प्रतियोगिता में चौ. लखीराम आर्य अनाथालय बालकों ने कबड्डी, कुश्ती, एथेलिटिकस में 53 मैडल जीते जिनमें गोल्ड मैडल 11, सिल्वर मैडल 32 और ब्रांज मैडल 10 जीते। साहिल ने कुल 6 पदक, पंकज ने 5 पदक, हिमांशु ने 4 पदक, हरीश ने 5 पदक, अभिषेक ने 3 पदक तथा बाकि सभी विद्यार्थियों ने पदक प्राप्त किये।

अनाथालय के अन्दर एक सादे समारोह का आयोजन किया गया जिसमें सी.जी.एम. सुकीर्ति गोयल सचिव डी.एल.एस.ए. मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थी। उन्होंने अपने हाथों से सभी बच्चों को मैडल पहनाये और अपनी प्रेषित शुभकामनाएं प्रेसित की और खेल को जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बताया।

प्रबन्धक समिति के प्रधान, सचिव, कोषाध्यक्ष के अतिरिक्त वकील श्री विजेन्द्र राठी व वकील श्री नरेन्द्र कटारिया ने भी विजेताओं को बधाई प्रदान की। फैडरेशन के अधिकारी श्री प्रदीप काद्यान, सुनील दलाल व अनुपम त्रिपाठी भी इस अवसर पर उपस्थित थे। कोच श्री संदीप, श्री अजित सिंह, श्री पारूल, श्री दयानन्द शर्मा, श्री हुकम सिंह आदि कार्यो को भी प्रबन्धन समिति ने सराहा।

राजवीर आर्य, प्रधान चौ. लखीराम अनाथालय

श्री विद्या सागर आर्य दिवंगत

आर्य समाज के गौरव प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री कन्हैयालाल आर्य उपप्रधान, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के बहनोई श्री विद्या सागर आर्य जी का निधन 04.05. 2018 को प्रेम नगर उत्तम नगर, नई दिल्ली में उनके निवास स्थान पर हुआ। उनकी श्रद्धांजलि सभा 07.05.2018 आर्य समाज विकासपुरी 'डी' ब्लॉक नई देहली में स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी एवं आचार्य सूर्य देव शास्त्री जी के सानिन्ध्य में की गई। वह अपने पीछे अपनी पत्नी श्रीमती पुष्पा देवी आर्या, सुपुत्र श्री अश्वनी कुमार (दीपिका) आर्या, सुपुत्री श्री गायत्री (अनिल) अरोड़ा छोड़कर गये है। उन्होंने अपने जीवन के 72 वसन्त देखें हैं।

मान्यवर विद्यासागर आर्य जी आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ द्वारा प्रकाशित आत्मशुद्धिपथ पत्र के आजीवन सदस्य रहे हैं। उनके निधन से आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ एवं अखेराम सरदारों देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रूखनगर के सभी सदस्य, कार्यकर्त्ता ट्रस्टी एवं अधिकारी हार्दिक शोक का अनुभव कर रहे हैं। परम पिता परमात्मा से करबद्ध प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्‌गति मिले और आप तथा उनके परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति मिले।

-विक्रमदेव व्यवस्थापक

माता प्रेमकौर हुई दिवंगत

श्रद्धेयमाता, प्रेमकौर धर्मपत्नी स्व. श्री सरदार सिंह जी, फलसवाल, गांव-भदानी (झज्जर) का 90 वर्ष की आयु में 20 अप्रैल 2018 को पैतृक गांव भदानी में स्वर्गवास हो गया। माता-जी धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी। अतिथि सत्कार करने में बहुत प्रसन्नता अनुभव करती थी। श्रद्धांजलि सभा में आत्मशुद्धि आश्रम के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि जी ने भी माता जी के गुणों की प्रशंसा की और कहा कि अपने पीछे वह भरापूरा परिवार छोड़कर गई है। पुत्र सतवीर और ऋषिप्रकाश को भी माता जी के पदचिन्हों पर चलने की प्रेरणा प्रदान की। **-कर्ण आर्य**

उषा का आह्वान

– डॉ. रामनाथ वेदालंकार

यावयद्द्वेषा ऋतपा ऋतेजाः,
सुम्नावरी सूनृता ईरयन्ती।
सुमंगलीर् बिभ्रती देववीतिम्,
इहाघोषः श्रेष्ठतमा व्युच्छ॥

ऋग् 1.113.12

ऋषिः**कुत्सःआङ्गिरसः**। देवता **उषाः**। छन्दः**त्रिष्टुप्**।

(उषः) हे उषा। **(यावयद्-द्वेषाः)** द्वेषों की पृथक्-कर्त्री, **(ऋतपाः)** सत्य की पालयित्री **(ऋतेजाः)** सत्यजाता, **(सुम्नावरी)**, सुखमयी, **(सूनृताः ईरयन्ती)** प्रिय-सत्य-वाणियों की प्रेरिका, **(सुमङ्गलीः)** सुमंगलमयी, **(देववीति बिभ्रती)** यज्ञ की धारयित्री, **(श्रेष्ठतमा)** श्रेष्ठतम **(तू)** **(इह)** यहाँ **(अद्य)** आज **(वि-उच्छ)** तमस् का विवासन कर, उद्भासित हो।

हे उषा! तुम अन्धकार का विवासन करती हुई गगन में चमको। चमकती तो तुम प्रतिदिन स्वयं ही हो, पर हम प्रार्थना इसलिए कर रहे हैं कि तुम हमारे जीवनों में भी चमको। जैसे तुम अन्धकार को विच्छिन करती हो, वैसे ही हमारे जीवनों से द्वेषभावों का विच्छिन्न करो, क्योंकि संसार में मच रही समग्र अशान्ति को उत्पन्न करानेवाले ये पारस्परिक द्वेषभाव ही हैं। तुम प्रकृति में सत्य नियमों की रक्षिका हो, एक दिन भी तुम्हारा आविर्भाव न हो तो अहोरात्र आदि की सम्पूर्ण श्रृंखला टूट जाए। तुम हमारे जीवन-व्यवहार में भी सत्य की रक्षा करो, क्योंकि वैयक्तिक एवं सामाजिक व्यवहारों में सत्य को अपना लेने से अनेक समस्याएँ, जो राष्ट्रों का सिर-दर्द बनी हुई हैं, स्वयं सुलझ जाएँगी। हे आभामयी उषा! तुम 'ऋतेजाः' हो, प्राकृतिक सत्य के वातावरण में जन्म लेती हो। हमारे चारों ओर भी सत्य-व्यवहार का वातावरण बनाओ, जिससे हमारी संततियां उसमें जन्म लेकर सत्यजाता कहलाएँ। तुम 'सुम्नावरी' हो, सुखमयी एवं सुख की सृष्टि करनेवाली हो। हमें भी जगत् में सुखी एवं सुख का स्रष्टा बनाओ। तुम 'सुनृता' की प्रेरिका बनो। गगन में तुम्हारे उद्भासित होने पर याज्ञिक जन सूनृता वेदवाणी का गान करें। और परिवार के सदस्य प्रियसत्यात्मिका सुनृता वाक् का प्रयोग करते हुए परस्पर सौहार्द की सृष्टि करें। तुम हमारे लिए सुमंगलमयी बनो, तुम्हारे उदय से आरम्भ होनेवाला प्रभात हमारे लिए कल्याणकारी हो। तुम 'देववीति' को प्रकाश-प्रदान-रूप व्यापक यज्ञ को, कर रही हो। हमें भी प्रभु-पूजन, अग्निहोत्र, अतिथि-सत्कार आदि बनों में प्रेरित करो। तुम श्रेष्ठतमा हो, हमें भी श्रेष्ठतम् बनने की प्रेरणा दो। हे दिव्य उषा! तुम आकाश में चमको, पृथिवी पर चमको, हमारे हृदय में चमको, हमारे मानस में विद्यमान समस्त तमोभाव को विदीर्ण करके चमको, अपनी अनुपम दिव्य आभा से हमें सर्वात्मना उद्भासित करती हुई चमको।

– वेद मञ्जरी

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान : विक्रय केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला. झज्जर (हरियाणा)
पिन-124507, चलभाष : 09416054195

सम्पादकीय

परमात्मा की प्राप्ति सत्संग से

-स्वामी धर्ममुनि जी

मान्यवर साधक बन्धुओं! **''सतां हि संगः सत्संगः''** सत्संग नाम सत्पुरुषों के संग का है। किसी संस्कृत के कवि ने बहुत सुन्दर कहा है-

चन्दनं शीतलं लोके चन्दनादपि चन्द्रमा।
चन्दनचन्द्रयोर्मध्ये शीतल साधु संगति॥

संसार में चन्दन शीतल है, चन्दन से भी शीतल चन्द्रमा है परन्तु चन्दन और चन्द्रमा दोनों के मध्य में साधुसंगति अधिक शीतल है। ध्यान रहे ओछे दुष्ट का संग कभी नहीं करना चाहिए। किसी सन्त का सन्देश है-

''संगति कीजै साधु की हरै ओर की व्याधि।
ओछी संगत क्रूर की आठों पहर उपाधि॥

कल्याणाभिलाषी प्रभु प्राप्ति के इच्छुकों को आत्मोत्थान के लिए योग विशेषज्ञों के साथ सत्संग करना, उनके साथ रहना अत्यन्त आवश्यक है। सत्संग एक ऐसी चाबी है जिससे उलझी हुई गुत्थियाँ सुलझ जाती हैं, शान्ति, संतोष जीवन की पूर्णता और मोक्ष मार्ग आनन्द का ताला खुल जाता है, सरल मार्ग मिल जाता है। हमारे पास धन-सम्पत्ति, यश, वैभव सब कुछ हो जाय फिर भी हमारे जीवन में एक रिक्ता बनी ही रहती है जब तक कि हमें किसी आत्मज्ञ महापुरुष का संग-सत्संग नहीं प्राप्त होता है। सत्संग से बढ़कर कोई सुख-आनन्द नहीं है। सबसे बड़ा सुख आनन्द सत्संग में है। संस्कृत कवि का कथन है-

सत्संग परम तीर्थ सत्संग परम पदम्।
तस्मात् सर्व परित्यज्य सत्संगः सततं कुरु।
भाग्योदयेन बहुजन्मनाजितेन सत्संगम् च लभते पुरुष।

सत्संग परमतीर्थ है, सत्संग परम पद है। इसलिए सर्व कामों को छोड़कर सत्संग अवश्य करो। क्योंकि अनेकों जन्मों के शुभकर्मो से भाग्य उदय होता है पुरुष को सत्संग का लाभ होता है। इस विषय में तुलसीदास जी कहते हैं-

सुत दारा और लक्ष्मी घर दुर्जन के भी होय।
सत्संग अरू हरि कथा तुलसी दुर्लभ दोय॥

पाठक बन्धुओ! सांसारिक वस्तुओं की उपलब्धियों के लिए हमें बहुत समय एवं धन लगाना पड़ता है। अनेकों कष्ट उठाने पड़ते हैं, अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है परन्तु सत्संग तो एक ऐसा साधन है जिसे जीवन में अपनाने से जन्म-जन्मान्तरों के कष्ट-दुःख नष्ट हो जाते हैं। यदि व्यक्ति सुने हुये पर आचरण करे, व्यवहार में उतारे, अन्यथा हम देख रहे हैं-कथा प्रेमी कथाएं सुनते-सुनते वृद्ध हो गये हैं, जीवन किनारे आ लगा है। विचार करें कथा श्रवण करते-सत्संग में जाते हुये हमारी करनी-कथनी में कुछ अन्तर पड़ा? रामायण की कथा सुनने से सत्संग में जाने से राम की तरह मर्यादा पालक बनें? योगेश्वरों के सुचरितों की कथाएं सुन-सुन कर जीवन योगयुक्त बनाए? सत्यार्थप्रकाश आदि महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों को पढ़ते हुए और वर्षों से सत्संगों में जाते रहे विद्वानों के प्रवचन सुनते हुये कितना समय व्यतीत हो गया, योगादि दर्शनों का स्वाध्याय करते हुए, योग साधना शिविरों मं साधकों का संग करते हुए जीवन बीत गया परन्तु फिर भी जीवन में परिवर्तन नहीं हुआ, आपने कभी विचार किया कारण क्या है? कारण है हम महापुरुषों का संग-सत्संग करते हैं परन्तु सुनी हुई बातों को जीवन में नहीं अपनाते अन्यथा **''सतां संगोहि भेषजम्''** सन्तो का योगियों का संगत तो भेषज-औषध है जिससे सारे दुःख कष्ट मिट जाते हैं। दुष्टो का संग दुःखों के अगाध समुद्र में डुबा देता है इसलिए **''त्यज दुर्जन संसर्ग भज साधु समागमम्''** सज्जनों का सत्संग आनन्द प्रदान कर आवागमन के चक्कर से छुटकारा दिलाता है। यदि हमें अपने कल्याण की कामना है, प्रभु प्राप्ति की इच्छा है तो सत्संग का भले जनों के संग का कोई अवसर नहीं छोड़ना चाहिए।

जिज्ञासुओ! सत्संग से आत्म शुद्धि होती है और आत्म शुद्धि से मोक्ष-मुक्ति मिलती है, जन्म-मृत्यु का झंझट समाप्त होता है। आध्यात्मिक जगत् में

बाह्य और आंतरिक शुद्धि-शुचिता पर बहुत बल दिया गया है। महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग में दूसरा अंग यम बताया है और यमों में सर्वप्रथम स्थान शौच का है। बाह्य जलादि से शरीर की शुद्धि और राग द्वेष आदि के त्याग से आंतरिक शुद्धि करनी चाहिए, वहीं शुद्धि का फल भी बताया हैं फल शौच से अन्तःकरण की शुद्धि, मन की प्रसन्ता और एकाग्रता, इन्द्रियों का जय तथा आत्मा के देखने अर्थात् जानने की योग्यता प्राप्त होती है। इसलिए व्यक्ति को अपने अन्तर को जप, ध्यान, उपासना, सन्ध्यादि के साधनों द्वारा शुद्ध करना चाहिए और स्नानादि के द्वारा बाह्य स्वच्छता कर लेनी चाहिए तभी सफलता मिलती है। जो निर्मल मन वाला होता है वही परमात्मा को प्राप्त कर सकता है। काम, क्रोध, मोह, मद, मत्सरादि कितने ही दुश्मन अन्दर, बैठे हो सत्संग के प्रभाव से धीरे-धीरे शिथिल होते-होते अन्त में सभी दुम दबा कर भाग जाते हैं। निरन्तर सत्संग में जाते रहने से अज्ञान हट जाता है। सन्तशिरोमणि तुलसीदास कहते हैं-**'बिनु सत्संग विवेक न होई'**। जिस प्रकार शरीर को हृष्ट-पुष्ट-स्वस्थ रखने के लिए पौष्टिक-सात्विक भोजन की आवश्यकता होती है। (मई अंक सात्विक भोजन से परमात्मा की प्राप्ति लेख में आप पढ़ चुके हैं) उसी प्रकार आत्मा को शुद्ध रखने के लिए सत्संग रूपी भोजन देने की आवश्यकता है। सन्त तुलसीदास ने इस विषय में बहुत उत्तम कहा है-

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध।
तुलसी संगत साधु की कटे कोटि अपराध॥

एक बात अवश्य ध्यान में रखें-आत्मा स्वतः ही शुद्ध है पर वह मन इन्द्रियों आदि के साथ एकता का अनुभव कर लेने से शरीर को ही अपना स्वरूप मानकर सुखी-दुःखी होने लगता है परन्तु जब सत्संग के प्रभाव से ज्ञान हो जाता है तब स्वतः मुख से शब्द उचारित हो जाते हैं-अहीमन्द्रो न शरीरम्' में आत्मा हूं शरीर नहीं **''मैं हूं अजर अमर अविनामी मुझ को नहीं मृत्यु की फांसी''** मैं रोगी हूं मैं अन्धा लंगड़ा हूं आदि वाक्य सभी असत्य हैं। यह सत्य धारण सत्संग से ही हटती है, सत्संग में देहात्मबोध से मुक्ति मिल जाती है, वह आत्मा शुद्ध हो जाती है और अपने वास्तविक स्वरूप में स्थित हो जाती है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में प्रातःसायं दोनों समय सत्संग की गंगा बहती है और वर्ष में चार बार हर तीन महीने में मास के अन्तिम सप्ताह में विशाल सत्संग समारोह का आयोजन विविध शिविरों,यज्ञों के माध्यम से किया जाता है आप सादर आमन्त्रित हैं-

आओ आत्मशुद्धि आश्रम में बहती है
सत्संग की गंगा।
जिसमें नहाने से होती है
आत्मा शुद्ध और मन चंगा।

अन्त में इतना ही कहना चाहूंगा कि सत्संग एक संस्कार-प्रक्रिया है। प्रभु प्राप्ति का साधन है। सत्संग की महिमा सभी आर्ष ग्रन्थों में मिलती है और ऋषि मुनियों द्वारा गाई गई है। सत्संग की महिमा का वर्णन जितना भी किया जाए वह अल्प ही रहेगा। सत्संग में आने-जाने से लाभ ही लाभ होगा। हमें मनुष्य शरीर मिला है मनन-चिन्तन सत्संग द्वारा जीवन सफल कर लेना चाहिए, उपनिषद् के शब्दों में **''महति विनष्टि''**।

सत्सगत्वेनिःसगत्वे निःसगत्वे निर्मोहत्वम्।
निर्मोहत्वे निश्चल तत्व निश्चलतत्वे जीवन मुक्तः॥

- धर्ममुनि

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर''। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, चलभाषः 9416054195

वह प्रभु महान सुपार तथा यज्ञशीलों के मित्र हैं

-डॉ. अशोक मित्र

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के सूक्त चार के सम्बन्ध में प्रकाश डालते हुए बताया गया है कि प्रभु सरूपक्रत्नु है। इस प्रभु की प्रार्थना करते हुए उपदेश किया गया है कि हम सदा यज्ञों के करने वाले बनें, जीवन भर सोम की रक्षा करते रहें, हम दान देने में आनन्द का अनुभव करें, सदा ज्ञानियों से ज्ञान प्राप्त करते रहें, किसी की निन्दा कदापि न करें, व्यर्थ के कामों में कभी अपना समय नष्ट न करें, सदा प्रभु की चर्चा में ही अपना समय लगावें क्योंकि वह प्रभु महान, सुपार तथा यज्ञशीलों के मित्र होते हैं। इन सब बातों का इस सूक्त के विभिन्न मन्त्रों के द्वारा चर्चा करते हुए बड़े विस्तार से इस प्रकार वर्णन किया गया है। आओ इस सूक्त के माध्यम से हम यह सब ज्ञान प्राप्त करने का यत्न करें।

हम क्रोध, काम और असत्य कार्यों से बचें।

प्रभु सरूपक्रत्नु है। ऐसे प्रभु का हम प्रतिदिन आराधन करें, जिससे हमारी वाणी मस्तिष्क मन तथा हाथ, सब सुन्दर बनें। हमारी वाणियाँ क्रोध रहित हों, मन में काम की सत्ता न आने पावे तथा हाथ लोभ सरीखे असत्य कार्यों में कभी न लगें। इस बात को ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल का यह मन्त्र बड़े सुन्दर ढंग से इस प्रकार उपदेश कर रहा है:-

सुरूपक्रर्त्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे।
जुरूमसि द्यविद्यवि॥ ऋग्वेद 1.4.1॥

सूक्त तीन में सरस्वती व ज्ञान के सागर का उल्लेख किया था तथा इसके साथ ही इस सूक्त की समाप्ति हुई थी। इसमें बताया गया था कि हम सरस्वती के अधिष्ठाता बनकर ज्ञान रूपी सागर का रूप धारण करें। इस मन्त्र में इस तथ्य से ही आगे बढ़ाने के लिए उपदेश करते हुए तीन बातों की ओर ध्यान दिलाते हुए कहा गया है कि:-

1. वह प्रभु ज्ञान स्वरूप व परम एश्वर्य से युक्त है:-

हम प्रभु स्तवन करते हुए अपने जीवन को गुणों से अलंकृत करें।

प्रभु सर्व व्यापक है। उसकी महिमा को हम प्रत्येक लोक में देखें। हम सदा स्वयं को प्रभु में ही स्थित रखते हुए उस प्रभु का स्तवन करें, गुणगान करें। इस प्रकार हम अपने जीवन को गुणों रूपी अलंकारों से अलंकृत करते हैं। इस बात को ही मन्त्र में इस प्रकार कहा गया है:-

अतः परिज्मन्ना गहि दिवो वा रोचनादधि।
समस्मिन्नारिन्जाते गिरः।

ऋग्वेद 1.6.9॥

1. उस परमपिता परमात्मा का भक्त उस की आराधना करते हुए उससे प्रार्थना करता है कि हे चारों दिशाओं में सर्वव्यापक प्रभो! आप हमें प्राप्त होइए। मानव इस जन्म में प्रभु को पाने की अभिलाषा रखता है। इस अभिलाषा की पूर्ति ही इस मानव का लक्ष्य है। इसलिए यह पिता से प्रार्थना करता है कि हे पिता! आप मुझे शीघ्रातिशीघ्र प्राप्त होइए, मिलिए, दर्शन दीजिए। आप हमें पृथ्वी लोक से, प्राप्त हों, चाहे आप हमें द्युलोक से प्राप्त हों, अथवा अन्तरिक्ष लोक से जो केन्द्र व विद्युत् की दीप्ति वाला है, जो केन्द्र बिजली के प्रकाश से चमकने वाला है हमें प्राप्त हों।

पृथ्वी में जो अग्नि आदि देव हैं, जो आपके तेज को और भी तेजस्वी करने वाले देव हैं, मैं उन सब देवों का चिन्तन करता हुआ, स्मरण करता हुआ, उन सब देवों में आपसे स्थापित किए गए देवता का दर्शन करूँ, उस देवता का दर्शन करूँ, जिसे आपने अपने में स्थान दे दिया है। इतना ही नहीं मैं अंतरिक्ष लोक में भी, अंतरिक्ष के देवों के माध्यम से सदा आप ही की महिमा को देखूँ, आप ही के दर्शन करूँ। द्युलोक को प्रकाशित लोक कहते हैं, इस लोक में भी मैं सदा आप ही के प्रकाश को पाऊँ, आप ही के प्रकाश को देखूँ। आप ही का प्रकाश मुझे मिले। इस प्रकार तीनों लोकों में सर्वत्र आप ही के प्रकाश के मुझे दर्शन हों, आप ही का प्रकाश मुझे दिखाई दे ताकि आप ही के प्रकाश की ज्योति को प्राप्त करूँ।

हे प्रभु! मैं सर्वत्र आप ही की महिमा के दर्शन करूँ। पृथिवी लोक हो चाहे अन्तरिक्ष लोक हो अथवा द्युलोक हो, जहाँ भी जाऊँ सर्वत्र आप ही आप अपनी महिमा के द्वारा दिखाई दें, आप ही की महिमा सर्वत्र कार्यरत, सर्वत्र गतिमान, सर्वत्र कर्मशील दिखाई दे तथा उस महिमा को देख कर, उस महिमा के दर्शन कर मैं अपने आप को उज्जवल करूँ, धन्य करूँ।

2. इस प्रकार जो लोग सब स्थानों पर उस पिता की महिमा को देखते हैं, इसे प्रभु स्मरण करने वाले लोग, प्रभु स्तवन करने वाले लोग, प्रभु का कीर्तन करने वाले लोग, प्रभु की निकटता पाने वाले प्रभु भक्त लोग इस परमात्मा में ही अपने जीवन को सुभाषित करते हैं, सजा लेते हैं। इस प्रकार इस प्रभु की स्तुति करते हुए, इस प्रभु की आराधना करते हुए, इस प्रभु का कीर्तन करते हुए, इस प्रभु की समीपता पाने का यत्न करते हुए, यह प्रभु भक्त अपने जीवन को प्रभु के अनुरूप बनाने का यतन करते हैं। जो गुण प्रभु में हैं, वैसे गुण स्वयं में धारण करने का निर्णय करते हैं। यह लोग स्वयं को भी उस पिता के समान बनाने का निर्णय लेकर वैसा ही बनने का प्रयास करते हैं। जब यह लोग ऐसा यत्न, प्रयास करते हैं तो उनके जीवन में सुन्दरता निरन्तर सुन्दर तथा और सुन्दर बनते चले जाते हैं।

हम लोग उस ज्ञान स्वरूप तथा परमैश्वर्य वाले प्रभु की आराधना, उस पवित्र पावन प्रभु का स्मरण करते हुए इस प्रकार कहते हैं कि हम उस ज्ञान के द्वारा जो ज्ञान विगत सूक्त के मन्त्रों के माध्यम से हमने प्रभु से प्राप्त किया था उत्तम रूप का निर्माण करने वाले परमात्मा को हम प्रतिदिन पुकारते हैं। परम पिता स्वयं ज्ञान स्वरूप है। वह प्रभु ज्ञान स्वरूप, ज्ञान का भण्डारी होने के कारण हमें भी सदा ज्ञान बाँटता रहता है किन्तु वह ज्ञान देता उसे ही है, जो उसके ज्ञान को पाने के लिए यत्न करता है। जो उस प्रभु से ज्ञान की भिक्षा माँगता है। जो किसी वस्तु की कामना ही नहीं करता, जो किसी वस्तु को पाने का यत्न ही नहीं करता, जो किसी वस्तु को पाने के लिए स्वयं को योग्य ही नहीं बनाता, उसे प्रभु कुछ देता भी तो नहीं है। इसलिए मन्त्र कहता है कि हम प्रतिदिन उस प्रभु की आराधना करते हैं। मन्त्र स्पष्ट कर रहा है कि आवश्यकता पड़ने पर प्रभु के चरणों में जा कर बैठ जाना ताकि जरूरत पूर्ण होने पर प्रभु को याद भी न करना, ऐसे लोगों को प्रभु का आशीर्वाद मिलने वाला नहीं है। यदि हमने उस पिता से कुछ पाना है तो नियमित रूप से उसके चरणों में बैठना होगा, नियमित रूप से उसे याद करना होगा, नियमित रूप से उसकी प्रार्थना, उसकी आराधना करनी होगी। तब ही वह प्रभु हमारी सुनेगा अन्यथा नहीं। इसलिए हम प्रतिदिन उस प्रभु के समीप बैठकर अराधना करें।

अब प्रश्न उठता है के हम प्रतिदिन प्रभु का आराधन क्यों करें? क्योंकि वह प्रभु हमारी वाणी को सूनृत वचनों से, ऐसे वचनों से जो उत्तम हों, मीठे हों,सबको आनन्द देने वाले हों, हर्षित करने वाले हों, ऐसे सुन्दन वचनों को उच्चारण करने वाली हमारी वाणी को बनाकर सुरूप बना देते हैं, उत्तम रूप से युक्त करते हैं। इतना ही नहीं वह प्रभु हमारे मस्तिष्क को भी, मस्तिष्क के साथ ही साथ हमारे मन को भी सुमतियों से, उत्तम मोतियों से भर देते हैं, पूरिपूर्ण कर देते हैं, सुविचार, उत्तर विचार से लबालब कर देते हैं। इस प्रकार हमारे मस्तिष्क व मन को उत्तम मति वाला बनाते हैं तथा उत्तम विचारों के चिन्तन करने वाला बना कर वास्तव में इसे सुरूप करते हैं तथा जो प्रभु हमारे हाथों से भी सदा उत्तम कार्य कराते हैं, उत्तम कार्यों की ओर प्रेरित करते हैं। उत्तम कार्य कौन से होते हैं, जिन्हें हाथों से करने के लिए प्रभु प्रेरित करते हैं। उत्तम कार्य यज्ञों को कहा गया है, जिससे अपने साथ ही साथ अन्यों को भी कल्याण होता हैं, वह प्रभु हमारे हाथों को ऐसे कार्यों को करने वाले बनाते हैं तथा हाथों से इसप्रकार के उत्तम कार्य कराते हुए इन्हें भी सुन्दर अर्थात् सुरूपता प्रदान करते हैं।

2. इस प्रकार के कार्य करने के कारण हम उस प्रभु को सुरूपक्रत्लु कहते हैं। ऐसे सुरूपक्रत्लु प्रभु को हम रक्षा के लिए पुकारते हैं। जब हम संकट में होते हैं तो हम अपने सम्बन्धी, अपने मित्र व अपने रक्षक को पुकारते हैं ताकि संकट के समय वह हमारा सहायक बनकर, हमारा रक्षक बन कर हमारा सहयोग करे, हमारी रक्षक बन कर हमारा सहयोग करे, हमारी रक्षा करे। पुकारते समय हम देखत हैं कि हमारी रक्षा का सामर्थ्य किस में है, उसे ही हम पुकारते हैं, जिसमें ऐसा सामर्थ्य है ही नहीं, उसे बुलाने का कुछ लाभ नहीं होता। हमारा वह प्रभु सुरुपक्रत्लु है, इस कारण ही हम उस प्रभु को पुकारते हैं। वह प्रभु हमारी रक्षा के लिए जो आवश्यक गुण हैं, उन सबका मालिक है, हम इसलिए उसे पुकारते हैं, ताकि वह हमारी रक्षा कर सके।

मानव अपने स्वार्थ के लिए तथा अनेक बार दूसरों की कमियों के कारण दूसरों की गलतियों के कारण क्रोध कर बैठता है। इस अवसर पर वह ऐसी कड़वी वाणी बोल जाता है, जिससे सुनने वाले के साथ ही साथ बोलने वाले की भी हानि होती है। इस

क्रोध से बचना आवश्यक होता है किन्तु इससे कैसे बचा जाए? जब हम उत्तम गुणों को पाने के लिए सुरूपक्रतु बनने का यत्न करते हैं तो वह सुरुपक्रतु प्रभु हमें क्रोध रहित कर कड़वे वचन बोलने से बचाते हैं। इतना ही नहीं वह प्रभु हमें कामवासना से भी बचाते हैं। कामवासना से भी बुद्धि नष्ट हो जाती है। प्रभु इससे भी हमें बचाकर सदा सुविचारों से युक्त करते हैं, सुविचार वाला बनाते हैं। इस सब के होते हुए भी यदि हमारे अन्दर लोभ आ जाता है तो हम इन उत्तम वृत्तियों के होने पर भी इनका प्रयोग उत्तम कार्यो में करने के स्थान पर बुरी वृत्तियों में ही लिप्त होकर धन एकत्र करने लगते हैं, दूसरों का धन छीनने लगते हैं। इस प्रकार हमारी उत्तम वृत्तियाँ दूषित हो जाती हैं, बुराईयों से ढक जाती हैं। इन उत्तम वृत्तियों के होने पर भी इनका प्रयोग उत्तम कार्यो में करने के स्थान पर बुरी वृत्तियों में ही लिप्त होकर धन एकत्र करने लगते हैं, दूसरों का धन छीनने लगते हैं। इस प्रकार हमारी उत्तम वृत्तियाँ दूषित हो जाती हैं, बुराईयों से ढक जाती हैं। इन उत्तम वृत्तियों का हम कुछ भी उपयोग नहीं कर पाते। अतः वह प्रभु हमें लोभ की वृत्ति से बचाकर यज्ञीय वृत्ति वाला बनाते हैं, हमें परिपक्व करने वाला बनाते हैं, दूसरों की सहायता करने वाला, दूसरों को दान देने वाला बनाते हैं।

3. जिस प्रकार हम एक गो दुग्ध निकालने वाले ग्वाले के लिए उस गाय को ही लाते हैं, जो दुग्ध से लबालब भरी हो। जब ग्वाला दूध निकालने के लिए आता है तो हम यदि उसे ऐसी गाय के समीप ले जाएँ, जिसका दोहन क्या करेगा, दोहन पहलेही किया जा चुका हो तो ऐसी गाय का गवाला और दोहन क्या करेगा। ऐसी गाय से तो कुछ भी दूध प्राप्त नहीं हो सकता। अतः हम उसे ऐसी उत्तम गाय पेश करते हैं, जो दोहन के लिए उपयुक्त हो। जिस प्रकार यह गाय दुह कर अमृत तुल्य उत्तम दूध उस ग्वाले के माध्यम से गाय हमें देती हैं, उस प्रकार ही वह प्रभु भी काम, क्रोध, लोभ आदि से हमारी रक्षा करने वाले हैं, जब हम उन्हें प्रतिदिन पुकारते है तो वह प्रभु आकर उस प्रकार ही आराधक के लिए, जो उन्हें प्रतिदिन स्मरण करता है, उसे उत्तम ज्ञान से परिपूर्ण कर देते हैं। जिस प्रकार गाय का दूध हमारे शरीर का पौषण करता है, उस प्रकार ही प्रभु का दिया हुआ यह ज्ञान, यह आध्यात्मिक ज्ञान का पोषण करता है।

- 104, शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी-गाजियाबाद

प्रभु भक्ति और उषा

- जगरूपसिंह छिक्कारा, बी-103, फ्लोर 10, सपेज पतिवी, सेक्टर-72, गुरुग्राम-122001

परमेश्वर के संकेत मात्र से नृत्य करते हुए चांद, सूरज तारों से सजा हुआ आकाश ये अरबों खरबों ग्रह, उपग्रह, सहस्रों सूर्य, ये विशाल सागर ये हिम से ढके हुए पर्वतों के शिखर ये रिमझिम वर्षा करते हुए बादल ये झरने, नदियां, रंग बिरंगे फूल, भिन्न 2 प्रकार की ऋतुएं, दिन और रात की अति सुन्दर व्यवस्था उसी प्रभु की सत्ता का आभास करा रहे हैं। उषः काल का समय प्रकृति में शोभा और सौन्दर्य को भर देता है। स्वर्णिम प्राची संसार की प्रत्येक वस्तु को सुनहरा बना रही है। बहते हुए नदी के प्रवाह में उसकी शोभा कुछ और ही प्रकार की होती है। वनस्थली की दूर्वा पर झिलमिलाते ओसकण अपना अनोखा सौन्दर्य बिखेर रहे होते हैं। इस समय न केवल ओसकण दूब पर मोती से झिलमिलाते हैं, अपितु रात को वृक्षों और वनस्पतियों पर पड़ी हुई ओस बूँद-बूंद करके टपकने लगती है। उधर फूल भी खिलने लगते हैं। अस्वस्थ से अस्वस्थ व्यक्ति का भी इस वेला में रोग का प्रकोप कम हो जाता है। प्रकृति से हमें ज्ञान के छोटे-छोटे दीपक मिले हैं, हमें उनसे अहा लेकर प्रभु भक्ति अवश्य करनी चाहिए। वर्तमान शरीर ही वह स्थल है जहां मनुष्य कर्मों का फल भी भोगता है और नये शुभ कर्म भी करता है। ये नवीन कर्म इस प्रकार के हों जो इस आवागमन के चक्र से छुटकारा दिला दें। इस लक्ष्य की प्राप्ति प्रभु की उपासना से ही सम्भव है।प्रभु की उपासना से बुद्धि निर्मल और करने पवित्र हो जाती है। बुद्धि पवित्र होने से मिथ्याज्ञान हट जाता है। मिथ्याज्ञान के समाप्त होने से अशुभ कर्म की ओर से प्रवत्ति हट जाएगी। अशुभ कर्मों के छूटने से मनुष्य जन्म-मृत्यु के चक्र से निकल जाएगा। जब जन्म व मृत्यु ही समाप्त हो गए तो दुःखों से छुटकारा तो अपने-आप मिल गया और मुक्त हो गया। हमें केवल इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही यह मानव शरीर मिला है।

ईश्वर की अवधारणा

- राजेन्द्र प्रसाद आर्य

आज सदियों से लोगों में इस बात की वहस छिड़ी हुई है कि ''क्या ईश्वर है अथवा नहीं'', जिस वजह से मानव समुदाय आज दो वर्गों में विभाजित हो गया है। एक बड़ा वर्ग वो है जो ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखता है वहीं दूसरा वर्ग वो है जो मानता है कि ईश्वर नाम की कोई चीज नहीं है और संसार में जो कुछ भी हो रहा है वो अपने आप ही हो रहा है। और इनकी संख्या भी करोड़ों में है।

यहाँ हम न तो धर्म ग्रन्थों का सहारा ले रहे हैं और न ही कोई तर्क वितर्क बल्कि कुछ तथ्यों को प्रस्तुत कर रहे हैं, देखना होगा कि ये तथ्य किस और ईशारा कर रही है.....

आज दुनियाँ में अरबों खरबों लोग हैं और इसके पूर्व में भी अरबो खरबों लोग पैदा हुए और मर भी गएं, आगे भी कितने अरबों खरबों लोग पैदा होगें पर कितना बड़ा आश्चर्य है कि इनमें से किसी का भी चेहरा किसी अन्य से नहीं मिलता है, यानि सबके चेहरे अलग-अलग प्रकार के हैं, यहां तक कि जुड़वा बच्चों में भी बहुत अधिक समानता होते हुए उनमें भी कुछ अन्तर होता है जिसे उसकी माँ अवश्य ही जानती है। यहां पर यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि वो कौन है? जो हर किसी का एक दूसरे से अन्तर बनायें रखता है। उनका सिर्फ चेहरा ही नहीं उनकी आवाज भी अलग-अलग प्रकार की होती है और सिर्फ आवाज ही नहीं उनके फिंगर प्रिन्ट भी अलग-अलग प्रकार के होते हैं। यहाँ पर थोड़ी देर के लिए कल्पना किया जाए कि उनके चेहरे अलग-अलग प्रकार के न होकर सिर्फ दो प्रकार के हो, पहला मर्दों के लिए अलग और महिलाओं के लिए अलग तो फिर क्या होगा और उनकी आवाजें भी अलग-अलग प्रकार की न होकर एक ही प्रकार हो तो कितनी बड़ी अवयवस्था फैल जायगी। पर ऐसा न होकर अलग-अलग प्रकार की है। निर्माण करने वाले को इसका पुर्वानुमान था, इसी से पता चलता है कि वो कितना बड़ा दूरदर्शी भी है। सिर्फ मनुष्य का चेहरा ही नहीं बल्कि जानवारों का चेहरा भी अलग-अलग प्रकार का होता है तभी तो हजारों भेड़ों के झुण्ड में भी भेड़ का बच्चा अपनी माँ को ढूढ़ लेता है और उसका ही दूध पीता है।

प्रकृति में भी हजारों प्राकर की वनस्पतियों की प्रजातियाँ होती हैं पर हर वनस्पति के पत्ते, फूल और फल अलग-अलग प्रकार के होते हैं, सबका रूप, रस, गंध और स्वाद भी अलग-अलग प्रकार के होते है, क्या रहस्य है।

ईश्वर को जानने के लिए बहुत दूर जाने की आवश्यकता नहीं है हम निर्माणकर्त्ता की सबसे अनुपम कृति इस मानव शरीर को देखें तो पता चलेगा कि कितनी ही बुद्धिमता पूर्वक इसकी संरचना की गई है। विज्ञान का विषय है कि कर्त्ता के बिना किसी क्रिया का सम्पादन नहीं होता है और न ही निर्माण, निर्माण है तो कोई निर्माणकर्त्ता भी होगा, रचना है तो कोई रचनाकार भी होगा। ऐसा बिल्कुल संभव नहीं कि निर्माता है मगर निर्माणकर्त्ता नहीं हो। तो आइए थोड़ा देखें कि इस मानव शरीर निर्माण में कितनी बुधिमता पूर्वक कौन-कौन सी चीजे प्रदान की गई हैं।

चमड़ी से ढका मानव शरीर बिना सूई-धागे के किसी प्राकर से सिया गया है कि पता ही नहीं चलता। मानव शरीर में 36 लीटर पानी रहता है, इसमें चीनी 1 किलो अमोनिया 2 किलो, नमक 150 ग्राम, लोहा इतना कि अगर जमा किया जाय तो 2 इंच मोटी कील बन सकती है गंधक इतना कि 100 दिया सलाई की तीलीयाँ बनाई जा सकती है, चर्वी इतना कि इससे 7 साबुन की टिकिया बनाई जा सकती है। 72 करोड़ 72 लाख 10 हजार 110 नस नाड़ियों का जाल शरीर के कोने-कोने में फैला हुआ है। आजतक आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी इसकी गिनती नहीं कर सका है।

सवाल है कि मानव शरीर में 36 लीटर पानी किसने और क्यों सुनिश्चित किया है क्योंकि पानी की मात्रा अगर बढ़ जाय तो भी परेशानी और अगर कम

हो जाय तो जान पर बन जाती है इसलिए तुरंत ही बाहर से पानी चढ़ाया जाता है। इसी प्रकार से अन्य चीजों का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है।

आगे देखिए मानव शरीर में 1 मिनट 16-17 श्वासें निरन्तर चल रही हैं। यह दिल 24 घंटे में 1 लाख 13 हजार वार धड़कता है इस प्रकार यह पूरे जीवन काल में करोड़ों बार धड़कता होगा और फिर एक दिन ऐसा आता है जब दिल धड़कना बंद हो जाता है और फिर जीवन लीला समाप्त हो जाती है, आखिर कौन है इसका नियत्रणकर्ता।

एक वयस्क मानव शरीर में 5-6 लीटर रक्त होता है, महिलाओं में इसकी मात्रा आफ लीटर कम होती है, रक्त का कार्य ताप का नियन्त्रण तथा शरीर को रोगों से रक्षा करना होता है। इस रक्त में निरन्तर संचार होता रहता है जिसे ब्लड सर्कुलेशन कहा जाता है। क्या रक्त संचार अपने आप होता है?

मानव शरीर में 206 हड्डियाँ होती हैं सिर में 29 हड्डियाँ होती हैं, रीढ़ में 26 रहती है, कपाल में 8, चेहरे में 14 और कान में 6 हड्डियां होती हैं। ईश्वर की अवधारना में विश्वास नहीं रखने वाले कृप्या यह बतायें कि शरीर में 206 हड्डियाँ क्यों प्रदान की गई हैं? अगर 206 के बदले में सिर्फ एक हड्डी हो तो क्या हो जायेगा। यही होगा कि न तो हम उठ सकते हैं, न ही मुड़ सकतें हैं और न ही चल फिर सकते है। मानव शरीर के दोनों हाथों में 5-5 अंगुलियाँ प्रदान की गई हैं ये अंगुलियां अगर न हो तो दुनियां का सारा मेकेनिज्म और टेक्नोलॉजी धरी की धरी रह जायेगी। इसका मतलब है शरीर निर्माण के हर बात में विज्ञान छिपा हुआ है।

अब हम मानव शरीर से बाहर आकर इस ब्रह्ममाण्ड को देखें। इस ब्रह्ममाण्ड में सभी ग्रह और नक्षत्र गतिशील है। हमारी पृथ्वी भी अपने अक्ष पर एक हजार मील प्रत्येक घंटे के चाल से लट्टू की तरह घूमती है जिस वजह से दिन और रात होता है। इसी प्रकार हमारी पृथ्वी सूर्य के चारों ओर भी 66 हजार मील प्रति घंटे के रफ्तार से चक्कर लगाती है और 365 दिन 56 मिनट और 46 सेकेण्ड में एक चक्कर लगाती है यही कारण है कि 365 दिनों का एक साल माना जाता है। हमारा सूर्य भी अपने सभी ग्रहों और सौर मण्डलों के साथ लेकर घूम रहा है सूर्य प्रत्येक घंटे में 40 हजार मील के रफ्तार से चलता है। कितना बड़ा आश्चर्य है कि सभी ग्रह और नक्षत्र नियम पूर्वक चलता रहता है, न कभी थकता है, न कभी रूकता है और न ही कभी आराम करता है इतना ही नहीं ये अरबों खरबों ग्रह और नक्षत्र गतिमान होते हुए भी आपस में नहीं टकरातें हैं। कैसी है ये व्यवस्था। प्रश्न उठता है कि वो कौन है जो सूर्य और पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों और नक्षत्रों में गति का संचार करता है। प्रकाश भी 1 लाख 86000 मील प्रत्येक सेकेण्ड के चाल से चलता है इसी प्रकार आवाज की भी अपनी गति होती है। क्या प्रकाश ओर आवाज ने जो निर्जीव है अपनी गति स्वयं ही निर्धारित कर ली है। इस प्रकार के हजारों प्रश्न है जिसका उत्तर ईश्वर की अवधारणा से इंकार करते हुए ढुढ़ना बहुत मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है। मैं तो पहाड़ों और नदियों में जंगलों के झूमते वृक्षों में, समुन्द्र की उफनती लहरों में, झरने के कलकल करते जलप्रताप में, तारों भरे आकाश में, आग की धधकती ज्वाला में इन अरबों खरबों ब्रहमाण्डों में, इस अनन्त विश्व में, इस आकाश के भीतर दिखाई देने वाले इस अन्तिम तारे में भी जिसके 1 लाख 86000 मील प्रत्येक सेकेण्ड की चाल से चलते हुए प्रकाश को पृथ्वी तक पहुँचने में एक करोड़ वर्ष लगते हैं मैं उसी प्रियतम प्रभु को देखता हूँ।

इस लेख के पढ़ने के पश्चात् ईश्वर की सता में विश्वास नहीं करने वाले लोगों में ईश्वर के होने अथवा नहीं होने की जो भ्रान्तियाँ है, वो दूर हो सके तो इसे हम अपना अहोभाग्य सकझेगें।

– प्रचारमन्त्री, आर्य समाज, मुजफ्फरपुर, बिहार

> सामाजिक क्रान्ति के लिए ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ें तथा अपने जीवन को प्रकाशित कर अन्य को प्रकाशित करने में सहयोग करें। **–विक्रमदेव शास्त्री**

गतांक का शेष

महारानी द्रौपदी

– राजवीर जी आर्य ट्रस्टी आश्रम

द्रौपदी के पाँच पुत्रों का होना:- इस बात से तो हम सहमत है कि द्रौपदी के पाँच पुत्र होना सम्भव है। लेकिन पाँच पुत्रों का पाचों पतियों से एक-एक पुत्र के होने वाली बात से हम सहमत नहीं हैं। पाश्चात और वाममार्गी लेखक इस विषय को लेकर भी द्रौपदी की प्रशंसा करते है कि जहां द्रौपदी अद्वितीय सुन्दरी थी वहां वह हर कला में प्रवीण थी। भाईयों के परस्पर निर्णय अनुसार उसे एक-एक साल अपने पाचों पतियों के साथ रहना था। जब वह युधिष्ठिर के साथ रही थी तो धर्म और शतरंज की चर्चा किया करती। भीम के साथ रहकर पाक कलां व मल्लयुद्ध की चर्चा करती, अर्जुन के साथ रह कर धनुर्विद्या, नकुल व सहदेव के साथ रह कर पुशधन की वृद्धि आदि की बात करती। इसी काल में उन पाचों भाईयों के साथ रहते युधिष्ठर से प्रतिबंध्य, भीम से शरूतो शोम, अर्जुन से श्रुतिकीर्ति, नकुल से शतनिका और सहदेव से शुतकर्मा पुत्र पैदा हुए। हम इससे सहमत नहीं हैं क्योंकि महाभारत ग्रंथ में द्रौपदी के पांच पुत्रों और उनके उपरोक्त नामों की चर्चा नहीं है। प्रमाण ये देखिये।

''द्रौपद्याश्च सुता वीरा: शिखंड़ी चा पराजित:''।

विराट पर्व-16

(अर्थात् राजा विराट के यहां राजा द्रुपद के साथ और अपराजित योद्धा शिखंडी के साथ द्रौपदी के पुत्र भी आये) यहां पर उनका नाम नहीं है हाँ अभिमन्यु का नाम है जो की वह भी द्रौपदी के पुत्रो की तरह अपने ननिहाल रह रहा था। यहां हमें द्रौपदी की प्रशंसा व्यंगात्मक लगती है। दासवृति, शुद्रा वृति, वेश्यावृति, वासनावृति के भाव स्पष्ट दिखाई देते है। हमने महाभारत या अन्य ग्रंथों के स्वाध्याय, मनन व चिन्तन से द्रौपदी महारानी का विशुद्ध चरित्र चित्रण लिखने का प्रयास किया है। उसी पर आप भी मनन करे कर्मफल व्यवस्था बड़ी विचित्र होती है। समय बदल रहा है। करवटे ले रहा है। मातृ शक्ति जाग उठी है। पुरुष विवश होता भी दिखाई दे रहा है। घुंघट से तीन तलाकों व अन्य अभिशापों से स्त्री मुक्त होती दिखाई दे रही है। चार दीवारी से बाहर निकल आई है। एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ गई है। ओलंम्पिक खेलों में धुम मचा चुकी है। सिविल सर्विसिज में पुरुषों को मात दे चुकी है। आज पुरुष भयभीत होता दिखाई दे रहा है। अब उसे कर्मफल व्यवस्था का यथार्थ ज्ञान होने लगा है। घुंघट में रखने वाला

समाज आज विश्वसुन्दरी प्रतियोगिता में प्रथम आई अपनी बेटी का स्वागत कर रहा है। 15 साल की लड़की अचुक निशाना लगा रही है। काल चक्र अपना स्वरूप दिखा रहा है। स्त्री में आत्मा नहीं होती यह बात बहुत पहले ही रफ्फूचक्कर हो चुकी है। थोड़ा ही शोषण बाकि हैं। कुछ आर्थिक असहाय, लोक लाज, अच्छे संस्कार व परिवार वाली लड़कियों का अभी भी शोषण हो रहा है। लेकिन समय बड़ा बलवान होता है यह भी परिवर्तन होगा इसे कोई नहीं टाल सकता हैं वह दिन दूर नहीं लगता जब लड़के वाले लड़की वालों की तरह जांच पड़ताल करते नजर आएंगे कि हमारा लड़का बहुत लायक है। घर का सारा काम-काज जानता है। इसकी प्रसन्नता में ही हमारी प्रसन्नता है। बस हमारी तो यही इच्छा है कि हमारा लड़का सुखी रहे। आपकी लड़की इसकी ताड़ना व शोषण न करे। समय आ गया है प्रदूषित इतिहास को बदलने का। पुरुष ने अपनी इच्छा अनुसार महाभारत जैसे ग्रंथ को केवल अपने लिये ही अनुकूल बनाने का प्रयास किया है। अर्जुन अपने भाईयों सहित द्रौपदी को लेकर आया तो बोलता है ''माँ देख हम तेरे लिए क्या ईनाम जीत कर लाये है'' अब इनकी कहानी किससे को राजी-खुशी छोड़ दो वरना समय आ गया है कि मजबुरन हमें सत्य स्वीकार करना होगा। अपनी मानसिकता में परिवर्तन लाना होगा। अग्नि परीक्षा केवल स्त्री के लिए ही हो यह उचित नहीं। महाभारत में महारानी द्रौपदी का चरित्र उच्च स्तर का मिलता है। हम तो इसे ऋषि दयानन्द की कृपा मानते है कि आज मातृ शक्ति ढिशुम-ढिशुम मैरी कॉम है ना कि मैरियल कॉम।

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
12. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
13. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
14. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
15. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
16. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
17. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
18. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
19. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
20. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
21. अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
22. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
23. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
24. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
25. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
26. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
27. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
28. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
29. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
30. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
31. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
32. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
33. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
34. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
35. कु. विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
36. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
37. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
38. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
39. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
40. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
41. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
42. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
43. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
44. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
45. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
46. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
47. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
48. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली .
49. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
50. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
51. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
52. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
53. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
54. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
55. यज्ञ समिति झज्जर
56. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
57. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
58. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
59. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
60. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
61. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
62. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
63. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
64. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
65. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
66. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
67. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
68. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी. एल.एफ-2, गुड़गांव
69. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
70. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
71. श्री रवि कुमार जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
72. श्री डॉ. सुरजमल जी दहिया, बराही रोड, बहादुरगढ़
73. श्री कर्नल रविन्द्र कुमार जी चड्डा, सैक्टर-19 बी, द्वारका, दिल्ली
74. श्रीमती रीटा चड्डा, सैक्टर-19 बी, द्वारका, दिल्ली

जाति सम्प्रदाय से बढ़ रहे क्लेश

- प्रकाश आर्य

बंट रही संस्कृति, बंट रहा देश,
जाति सम्प्रदाय से बढ़ रहे क्लेश।
मानव हो मानवता के बनो पुजारी,
है वसुदेव कुटुम्बकम की संस्कृति हमारी॥
मानवता को नष्ट करता, जातिवाद
जाति, सम्प्रदायों में बांटकर,
कर रहे मानवता का अपमान।
उसके बेटे-बेटियों पर ये जुल्म,
करेगा क्षमा नहीं भगवान॥

परमात्मा ने इस संसार का व प्राणियों की आवश्यकता की चल-अचल वस्तुओं का निर्माण किया। उसने सूर्य, चन्द्रमा, मेघ से गिरता पानी, नदी, तालाब, समुद्र, यह पृथ्वी, वृक्ष, औषधि पशु आदि समस्त प्राणि मात्र के लिए दिए। उसने मनुष्य-मनुष्य में कोई भेद नहीं किया क्योंकि हम सब परमात्मा के ही पुत्र-पुत्री हैं, हममें कोई भेद नहीं। ये जाति भेद अज्ञानतावश मनुष्यों की देन है। परमात्मा ने किसी को ऊँचा-नींचा, अछूत या दलित नहीं बनाया, यह सब तो मनुष्य की सोच के कारण हैं। जब मनुष्य की बुद्धि में यह अज्ञानता का विचार नहीं आया था तब तक संसार में मनुष्य मात्र की एक ही जाति थी।

दुनिया का इकरंगी आलम आम था।
पहले एक कौम थी, इंसान जिसका नाम था।

यह जातिवाद हमारी सनातन संस्कृति के अनुसार नहीं है। जिस प्रकार आज अनेक ऐसी कई मान्यतायें प्रचलन में आ गई हैं, जिनका कोई ठोस आधार ही नहीं है। किन्तु उन्में मानने वालों की संख्या अच्छी खासी हो गई है, इसलिए उसे अब सामाजिक मान्यता के रूप में माना जा रहा है। ऐसे ही वर्ण व्यवस्था के स्थान पर जाति व्यवस्था का प्रचलन हो गया। क्यों हुआ, कब से हुआ, यह कहीं स्पष्ट नहीं है।

समाज में पहले वर्ण व्यवस्था थी जिसमें मनुष्य की पहचान गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर थी, उचित थी। मनुष्य को अपनी योग्यता के अनुसार वर्णों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र स्थान प्राप्त होता था। आज न समाजवाद है, न राष्ट्रवाद है, न मानवीय दृष्टिकोण, इन सब पर भारी जातिवाद है। परिणाम हुआ खरबूजे को देख खरबूजा रंग बदलता है की कहावत चरितार्थ हो रही है। जब जातिवाद को शस्त्र बनाकर ही सब कुछ पाया जा सकता है तो दूसरा वर्ग जो अभी तक जातिवाद को महत्व नहीं देता रहा वह भी इसी ओर प्रेरित होकर जातिवाद को बढ़ावा दे रहा है।

जन्म के अनुसार जाति व्यवस्था में मनुष्य को बांटना समस्त समाज के लिए एक नासूर है। ऐसा नासूर जिसकी आग में समाज, संगठन, संस्कृति, राष्ट्र सभी बुरी तरह झुलस रहे हैं।

जातिवाद और साम्प्रदायिक विचार धारा के कारण यह देश वर्षों तक गुलाम रहा। सनातन धर्म की जातियों में बटी शक्ति ने विदेशी ताकतों को अवसर प्रदान किया। जातिवाद के पाप के कारण हमने ही भाईयों को तिरस्कृत कर उन्हें सनातन धर्म से पृथक होने हेतु विवश किया। जातिवाद के विष का ही प्रभाव था, डॉ. भीमराव अम्बेडकर जैसे महान व्यक्तित्व को बौद्ध सम्प्रदाय स्वीकार करना पड़ा। हृदय विदारक घटनाओं से पूर्ण मोपला कांड जिससे सनातन संस्कृति को भारी क्षति हुई, उपेक्षा के कारण सनातन धर्मियों ने दूसरे सम्प्रदाय को अपना लिया। जातिवाद का ही दुष्परिणाम कश्मीर, केरल, पूर्वांचल के कई राज्य हैं, जहां सनातन धर्मी अपने ही देश में अनेक प्रकार के संकट हिंसा और अपमान से भरी जिन्दगी जी रहे हैं। जाति व सम्प्रदाय का ही परिणाम पाकिस्तान, बंगला देश व कश्मीर का ताण्डव है। इस जातिवाद, छुआछूत की मानसिकता ने ही अपनी शक्ति, संगठन देश को कमजोर कर दिया। जन्म से मनुष्य की जाति मानने का कहीं शास्त्रोक्त कोई प्रमाण नहीं है।

योगीराज श्रीकृष्ण ने चार वर्णों को गुण कर्म के अनुसार माना, कहा-**चातुर्वरण्यं मयाश्रृष्ट गुण कर्म विभाग सः।** संसार के श्रेष्ठतम विद्वान् आचार्य

मनु से जन्म से जाति को नहीं माना है। कर्म के अनुसार वर्ण व्यवस्था का सिद्धान्त माना गया है। **जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्चयते।** जन्म से सभी शूद्र हैं, ज्ञानमय संस्कारों से ब्राह्मण बनते हैं। जन्म से सभी शूद्र अर्थात् अज्ञानी ही होते हैं। क्योंकि बालपन में किसी को कोई ज्ञान नहीं होता इसलिए सभी को शूद्र कहा जाता है, परमात्मा ने हमें यह स्वतन्त्रता दी है कि हम अपने जीवन को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र जो बनाना चाहे स्वयं बना सकते हैं। जन्म से कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य पैदा नहीं होता। शूद्र को किसी जाति से जोड़ना मूर्खता है।

प्राचीन समय में वर्ण व्यवस्था ही व्यवहार में थी। इसकी पुष्टि तुलसीदास जी की इन पंक्तियों से भी होती हैं-

वरणाश्रम निज-निज धरम निरत वेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखई नहिं भय सोक न रोग।।

जाति शब्द का उपयोग प्राणियों की एक प्रकार की श्रेणी के लिए किया जाता है, पहले यही किया जाता था। जैसे पंखों से उड़ने वाले समस्त पक्षियों की जाति पक्षी जाति, जल में रहने वाले समस्त जीवों की जलचर जाति, चौपाए प्राणियों की पशु जाति और मनुष्य के रूप में जन्मे सभी की मानव जाति एक ही कहलायेगी ''मानव जाति''।

हमारी सनातन संस्कृति मनुष्य बनने का सन्देश देती है। **''मनुर्भव जन्या दैव्यमः जन्म''** पहले स्वयं मनुष्य बनो और दूसरों को भी मनुष्य बनाओ। किसी जाति का सदस्य बनने को नहीं कहा।

हम जिन भगवान राम को मानते हैं, उन्होंने सबको गले लगाया। जिनके रातदिन गीतों में गाते हैं **''रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम''** पर उसे अपने जीवन में आत्मसात नहीं करते।

-मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
नई दिल्ली, मो. 9826655117

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	35.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	45.00	रु. प्रति किलो
विशेष	55.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	75.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	130.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

सात दिवसीय योगासन-प्राणायाम-व्यायाम एवम् चरित्र निर्माण संस्कार शिविर की झलकियां

सात दिवसीय योगासन-प्राणायाम-व्यायाम एवम् चरित्र निर्माण संस्कार शिविर की झलकियां

परिवार में बुजुर्ग व्यक्ति की आवश्यकता

-सत्यनारायण भटनागर

आजकल एकल परिवारों का चलन हो गया है। हम दो और हमारे दो ही परिवार के अंग मान लिए गए हैं। व्यक्तिगत सुख की इस चाह ने परिवार की परिभाषा ही बिगाड़ कर रख दी है। परिवार प्रेम, सहयोग, त्याग सीखने की एक पाठशाला होती थी। घर की अंगीठी के पास बैठ कर ये गुण अनायास सीखे जाते थे। किन्तु आज वह बात कहां? घर के बुजुर्ग भी इस वातावरण को समझ गए हैं इसलिए बहुत से बुजुर्ग तमाम कठिनाइयां झेलते हुए भी अकेले रहना पसंद करते हैं और परिवार से दूर रहते हैं। क्या यह स्थिति परिवार और देश के हित में है। आइए विचार करें।

श्री 'क' का अभी-अभी विवाह हुआ है। वे और उनकी नवविवाहिता पत्नी एक कस्बे में रहते हैं। किसी मामूली बात पर उनमें मतभेद हो गया। मतभेद बढ़ता गया और अन्त में श्रीमती 'क' बिना कुछ कहे घर छोड़कर चल दी। श्री 'क' दु:खी हो गए। अपनी मां को बुलाया। चार दिन में ही श्रीमती 'क' का पता चला कि वे अपनी बहन के यहां हैं। वहां से मां ने बुलाया, समझाया और परिवार शान्तिपूर्वक चला। श्रीमती 'क' कहती हैं कि यदि मां नहीं होती तो परिवार चल ही नहीं सकता था। नव दम्पत्ति के लिए तो परिवार के बुजुर्ग अमृत तुल्य हैं। एक अच्छे परिवार की कल्पना आप बिना बुजुर्ग के कर ही नहीं सकते। संस्कृत में कहा गया है **'वृद्ध वाक्यै बिना तूनं नैवोत्तारं कथचन'** अर्थात् वृद्ध लोगों के बिना किसी प्रकार का विस्तार नही।

श्रीमती 'ख' शासकीय सेवा में है। उनके पति भी अधिकारी हैं। जब दोनों काम पर जाते हैं, तो घर पर ताला होता है। बच्चा सड़क पर खेलने को मजबूर है। इतनी खराब स्थिति है कि आज मजबूरी में आंसू ही बहा सकते हैं। अब दादी मां के आ जाने से एक सुकून है। जनगणना, निर्वाचन जैसे राष्ट्रीय कार्यक्रमों में शासकीय सेवकों को जो कष्ट उठाना पड़ता हैं उसका कारण परिवार में बुजुर्ग व्यक्ति का अभाव ही है। बुजुर्ग व्यक्ति को प्रेमपूर्वक परिवार में रखना नवदम्पति का ही स्वार्थ है। थोड़ी-सी स्वतन्त्रता के लिए आधुनिकता का चोगा पहन हम व्यक्तिगत स्वार्थ का बिगुल बजाते हैं। वह जीवन संघर्ष में अपने जी विरूद्ध हथियार उठाने जैसा है।

बुजुर्ग व्यक्ति के अनुभव की एक सुगंध है। उसकी दृष्टि में एक प्रकाश है। उसकी काया में शुद्ध प्रेम, अपनत्व, ममत्व, त्याग, सहयोग समाया हुआ है। वह तपा तपाया सोना है। उसका साथ लक्ष्मी का निवास है। यदि आप बुजुर्ग को साथ रखते हैं तो परिवार को क्या मिलता है। विचार कीजिए।

परिवार के संबंध में साहित्यकार जैनेन्द्र के इन विचारों पर ध्यान दीजिए, 'परिवार मर्यादाओं से बनता है, परस्पर कर्त्तव्य होते हैं। अनुशासन होता है और उस नियत परम्परा में कुछ जनों की इकाई एक हित के आसपास जुटकर व्यूह में चलती है। उस इकाई के प्रति हर सदस्य अपना आत्मदान करता है। इज्जत खानदान की होती है। हर एक उसमें लाभ लेता है और अपना त्याग देता है।

अनुशासन- जिस परिवार में बुजुर्ग रहता है, उसमें अनुशासन बना रहता है। चाहे जैसा वातावरण हो, स्वच्छन्दता का प्रवेश वहां नहीं हो सकता। बुजुर्ग घर में रहता है, इससे युवकों व बच्चों पर एक नियंत्रण रहता है। सब बुजुर्ग की भावनाओं का सम्मान करते हुए रहते हैं, इससे घर का अनुशासन बना रहता है। ऐसे परिवार से शराब, जुआ, रात्रि कालीन दावतें और मर्यादाहीन व्यवहार कोसों दूर रहता है।

बुजुर्ग व्यक्ति का वास सुख-शान्ति की गारंटी है। कितने ही विवाद तो बुजुर्ग व्यक्ति की उपस्थिति के कारण बिना उलझे सुलझ जाते हैं और जो विवाद अहंवश भी हैं वे भी बुजुर्ग व्यक्ति के शांत हस्तक्षेप से सुलझ जाते हैं और घर की बात घर में रहती है। अड़ोसी-पड़ोसी उसका मजा नहीं ले पाते। पति-पत्नी के सुलह के आधार है बुजुर्ग।

बुजुर्ग व्यक्ति बच्चों का सबसे अच्छा मित्र और सहयोगी होता है। बच्चों के साथ बच्चा बन कर खेलना, उन्हें कहानी सुनाना, उनके लिए खिलौने

बनाना, उन्हें नई-नई बात सिखाना बुजुर्ग व्यक्ति का हार्दिक आनन्द होता है। आज के इस समय में जब किसी के पास मरने को समय नहीं है, बुजुर्ग व्यक्ति भविष्य की धरोहर के लिए अनुभवयुक्त अमूल्य समयदान करता है। आज भी बच्चों के सबसे अच्छे मित्र वृद्ध ही हैं। बच्चों को स्कूल छोड़ना और लेने जाना बुजुर्ग व्यक्ति के लिए सुख व आनन्द का कारण है।

कच्ची गृहस्थी में परिवार की बहू के पास इतने काम होते हैं कि वह अकेली इन कार्यों का निर्वाह कर ही नहीं सकती है। बहुत छोटे दिखने वाले कार्य भी समय चाहते हैं। हरा धनिया, मैथी, पालक साफ करना ऐसे ही कार्यों के उदाहरण हैं। वृद्ध व्यक्ति घर के लिए किफायती सामान लाने, उन्हें साफ करने और व्यंवस्थित रखने में एक आनन्द अनुभव करता है। वह यह कार्य प्रसन्नतापूर्वक करता है।

बुजुर्ग व्यक्ति जिस घर परिवार में रहता है, वहां एक अदृश्य नियंत्रण रहता है। वह कुछ कहे, न कहे, यह नियंत्रण कार्य करता दिखाई देता है। खाना-पीना, रहन-सहन, व्यवहार, वार्तालाप हर संबंध में घर के बुजुर्ग का ध्यान रखना पड़ता है। इस नियंत्रण के कारण परिवार सुचारु चलता है और जिस परिवार में बुजुर्ग व्यक्ति का सम्मान नहीं होता, वहां एकता नहीं होती। जहां एकता नहीं होती वहां व्यर्थ के लड़ाई-झगड़े और अपव्यय आम बात होती है और उस घर में लक्ष्मी भी निवास नहीं करती। हिन्दी लोकोक्ति में कहा गया है, 'वयोवृद्ध का सम्मान करने से पापों का नाश होता है।'

हमारी संस्कृति और संस्कार तथा परम्परा का वह वाहक होता है। परिवार का वह इतिहास और भूगोल होता है। परिवार के संघर्षो का वह चश्मदीद गवाह है और इसलिए भविष्य के लिए वह फ्रैंड फिलासफर व गाइड है। जर्मन लेखक राडपाख इसलिए सच कहे हैं, 'वृद्धावस्था विचार करती है, यौवन साहस करता है।'

बुजुर्ग व्यक्ति के साथ रहने के अनेक लाभ हो सकते हैं। वहीं हमें उसका सम्मान करना, उसके नियंत्रण व अनुशासन को स्वीकार करना पड़ता है। ऐसा नहीं है कि बुजुर्ग केवल अन्ध विश्वासी और सनकी होते हैं। आज का वृद्ध प्रगतिशील और आधुनिक भी है। केवल समझ का अन्तर है। युवा जिसे आधुनिकता कहता है, उसे उनका अनुभव स्वीकार नहीं करता। अनुभव का कोई विकल्प नहीं है। अनुभव के आगे भावुकता और क्षणिक सुख का कोई महत्व नहीं है। इसलिए आप यदि एकल परिवार में रहते हैं तो जाइए बुजुर्गों को ससम्मान लाइए और उनके अनुभव का लाभ उठाइए। यही आपका और देश का सुख है।

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं–

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। आश्रम की दूसरी शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्मपुर रोड़, फर्रूखनगर, गुड़गांव के लिए भी सहयोग देकर उत्साहित करें।

धन्यवाद! –व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195

टिप्पा-टिप्पा टिप्स

- नहाने से पहले सरसों के तेल से त्वचा की मालिश करें, दिन में कम से कम 2-3 बार आँखों में पानी के छींटे मारे। चेहरे पर साबुन न लगाएं। इसकी जगह दही-बेसन, चोकर व मुलतानी मिट्टी का प्रयोग करें। नीम की पत्तियों को पानी में उबाल लें, फिर इसे नहाने के पानी में मिलाकर नहाए। इससे त्वचा के जीवाणु नष्ट होते है।
- प्रदूषण भरे वातावरण में डैड सेल्स की समस्या आम है। एक्सफोलिएट यूज करने से त्वचा के डैड सेल्स निकल जाते हैं और त्वचा रेशम-सी कोमल व चमकदार हो जाती है। डैड सेल्स को हटाने के लिए माइक्रोडमब्रिजन और ग्लाइकोलीक पील्स ट्रीटमेंट करा सकती हैं।
- अनार का सेवन रक्त बढ़ाने से लेकर एजिंग रोकने जैसे कई फायदों से भरा है। अनार के सेवन से हेपेटाइटिस जी जैसे गंभीर वायरस संक्रमण को रोकने में मदद मिलती है। अनार में मौजूद तीन तत्व पुनिकालिन, पुनिकैलाजिन और एलैजिक शरीर में एंटी एचसीवी तत्व बढ़ाते हैं, जिससे वायरस से लड़ने में मदद मिलती है। अनार का सेवन लिवर के लिए हमेशा से फायदेमंद माना जाता है।
- खाँसी व दमा में छाती और पीठ पर कलौंजी के तेल की मालिश करें, तीन बड़े चम्मच तेल रोज पीएँ और पानी में तेल डालकर उसकी भाप लें।
- उदासी और सुस्ती मिटाने के लिए एक गिलास संतरे के रस में एक बड़ा चम्मच कलौंची तेल डालकर 10 दिन तक सेवन करें।
- डायबिटीज में एक कप कलौंजी के बीज, एक कप राई, आधा कप अनार के छिलके और आधा कप पित्तपापड़ा को पीसकर चूर्ण बना लें। आधा चम्मच कलौंची के तेल के साथ नाश्ते के पहले एक महीन तक लें।
- गुर्दे की पथरी के लिए पावभर कलौंजी को महीन पीसकर पावभर शहद में अच्छी तरह मिलाकर रख दें। इस मिश्रण का दो बड़े चम्मच एक कप गर्म पानी में एक छोटे चम्मच तेल के साथ अच्छी तरह मिलाकर रोज नाश्ते के पहले पीएं।
- सुन्दर चेहरे के लिए एक बड़ा चम्मच कलौंजी का तेल एक बड़े चम्मच जैतून के तेल में मिलाकर चेहरे पर मलें और एक घण्टे बाद चेहरे को धो लें, कुछ ही दिनों में चेहरा चमक उठेगा।
- त्वचा की झुर्रियाँ मिटाने में शहद बहुत सहायक है। शहद की पतली-सी परत चेहरे पर लगाएं तथा 15-20 मिनट बाद धो लें, तैलिय त्वचा वाले शहद में कुछ बूदें नींबू की डाल सकते हैं।
- वजन कम करने के लिए कच्चे या पके हुए पपीते का सेवन खूब करना चाहिए। पपीते के प्रयोग से शरीर में अतिरिक्त चर्बी नहीं जमती और वजन तेजी से घटता है।
- हल्दी, मैथी तथा सौंठ बराबर मात्रा में लेकर पीस लें यह चूर्ण प्रतिदिन 1-1 चम्मच की मात्रा में सुबह-शाम गुनगुने पानी से लेने से घुटनों का दर्द ठीक होता है।
- गेंदे के फूलों में एक विशेष प्रकार की गंध होती है। मच्छरों को दूर रखन हेतु घर में गमलों अथवा क्यारी में गेंदे के पौधे अवश्य लगाएँ।
- प्रातः काल खाली पेट-5-10 ताजा तुलसी के पत्त पानी के साथ लें। इसमें प्रचुरमात्रा में एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं। यह प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाकर सर्दी जुकाम, बुखार से लेकर, कैंसर तक में लाभकारी है।
- अजवाइन एंटीबैक्टीरियल और एंटीऑक्सीडेंट होती है। 50 मिलीमटीर तिल के तेल में 10 ग्राम अजवाइन मिलाकर उबाल लें। ठण्डा होने पर इससे जोड़ों की मालिश करने से दर्द में आराम मिलता है। अजवाइन और दानामेथी को 20-20 ग्राम की मात्रा में लेकर पीस ले। इस मिश्रण को एक कपड़े में बांधकर पोटली बना लें और तवे पर सहने योग्य गर्म करके दर्द वाले जोड़ पर सेक करने से लाभ होगा। एक चम्मच अजवाइन को थोड़े पानी में उबालें। इस पानी से एक कपड़ा भिगोए, प्रभावित हिससे पर खें, आराम मिलेगा। **-साभार निरामय जीवन से**

साहस करें दु:साहस नहीं

-महात्मा चैतन्यस्वामी

संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं उन सब में साहस एक मुख्य तथा विशेष गुण रहा है। जिस व्यक्ति के हृदय में साहस है वह कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी संघर्ष करके सफलता प्राप्त कर लेता है। इसके विपरीत जिस व्यक्ति में साहस नहीं है वह समस्त अनुकूल परिस्थितियां होते हुए भी हार मान बैठता है। इसीलिए किसी ने बहुत ही सुन्दर कहा है-'**मन के हारे हार है? मन के जीते जीत।**' गत दिनों मुझे एक महाविद्यालय में छात्रों को सम्बोधित करने के लिए बुलाया तथा मुझे यह भी कहा कि कल से आरंभ होने वाली परीक्षाओं में बहुत ही अच्छे अंक लेने पर मैं आप सबको बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। मेरे इस वक्तव्य पर पहले तो वे मुझे आश्चर्य से देखने लगे मगर शीघ्र ही मेरे कहने के आशय को समझकर अपनी-अपनी कमर सीधी करके बैठकर मुस्करा पड़े। जिस व्यक्ति में साहस की कमी है वह किसी भी प्रकार की परीक्षाओं से घबराता है मगर जो साहस से भरा हुआ है वह तो मानों परीक्षाओं की प्रतीक्षा में रहता है तथा परीक्षाओं में सफल होकर स्वयं पर स्वाभिमान करता है। साहसी व्यक्ति समय की अनुकूलता-प्रतिकूलता पर ध्यान नहीं देता है बल्कि हर चुनोति को स्वीकार करके उसमें सफलता प्राप्त करता है। कवि हरिवंश राय वच्चन की बड़ी प्रसिद्ध कविता है जिसमें वे ऐसे ही साहसी व्यक्ति के भावों को इस प्रकार लिखते हैं-**तीर पर कैसे रूकूँ मैं आज लहरों में निमन्त्रण.....** साहसी व्यक्ति अनुकूलताओं की प्रतीक्षा नहीं करता है बल्कि वह अपने आत्मविश्वास से समस्त प्रतिकूलताओं को अपने अनुकूल करने की क्षमता रखता है....

यदि वास्तव में देखा जाए तो युवा-वर्ग ही किसी समाज या राष्ट्र की शक्ति होती है। जिस समाज या राष्ट्र की युवा-शक्ति में जगरूकता, साहस तथा जुझारू-पन नहीं वह समाज व राष्ट्र कभी भी अपनी चतुर्दिक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर नहीं हो सकता है। इसके विपरीत जहां युवाओं में जागरूकता, साहस तथा जुझारू-पन हो, उस समाज व राष्ट्र के लिए उन्नति के हजारों ही स्त्रोंत प्रवाहित हो जाते हैं। जिस प्रकार एक सम्पन्न और समृद्ध परिवार को आगे आने वाली पीढ़ी चाहे तो अपनी योग्यता और साहस के आधार पर उस परिवार को और अधिक यश, समृद्धि और सम्पन्नता की ओर ले जा सकती है तथा साहस के अभाव में और भी अधिक पतन की गहरी खाईयों की ओर ले जा सकती है, ठीक इसी प्रकार समाज या राष्ट्र के लिए भी शिक्षित तथा जागरूक युवा पीढ़ी ही उन्नति के द्वार खोल सकती है। इसी से युवा पीढ़ी की सार्थकता का पता चलता है। रामायण में एक प्रसंग आता है कि समुद्र को पार करने की चुनौति सामने थी मगर सभी निराश-हताश से बैठे हुए थे। तभी बुद्धिमान, जामवन्त ने महाबली हनुमान की पहचान उनक असीम बल और सामर्थ्य से कराई तो उन्होंने समुद्र लांघकर, लंका में प्रवेश करके तथा वहां अपनी अपार शक्ति का परिचय देकर लंकावासियों को बिस्मित कर दिया था।

हम तो यह मानकर चलते हैं कि आज के युवाओं में भी असीमित बल और साहस एवं सामर्थ्य है मगर उन्हें या तो स्वयं इसकी पहचान करनी होगी अन्यथा बुद्धिजीवी वर्ग को उस शक्ति से उनकी पहचान करानी होगी। इसके साथ ही उसे उस शक्ति को सृजनात्मक कार्यों में उपयोग करने की प्रेरणा भी देनी होगी। जहां कहीं भी नव-निर्माण का सूत्रपात हुआ है, युवा हाथों से ही हुआ है। प्रगति की कोंपले युवा-स्पर्श से ही प्रस्फुटित हुई हैं। वीर शिवा, महाराणा प्रताप, झांसी की रानी, चन्द्रगुप्त तथा महामना आचार्य चाणक्य की सन्तानें विकट से विकट परिस्थितियों में भी राह निकालना जानती है। सांस्कृतिक चेतना के अग्रदूत शंकराचार्य तथा महर्षि दयानन्द जैसे पुरोधाओं के अनुयायी अपनी विरासत को सुरक्षित रखना स्वयं जानते हैं। ऐसे ही और कितने ही महापुरुषों ने अपने स्वार्थों को त्याग कर धर्म और संस्कृति की रक्षा की है। यदि युवा-वर्ग ठान ले तो उनके लिए कुछ भी असंभव नहीं है। भारत मां की बेड़ियां शायद ही टूट पाती यदि युवा-वर्ग ने अपने अपार साहस का परिचय देते हुए अपने प्राणों की आहुतियां न दी होती। अपने अस्तित्व को मिटाकर राष्ट्र की प्रभुसत्ता एवं अखण्डता

को सुरक्षित रखने वाले वीरों का काफिला जब सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है इन भावनाओं को लेकर आगे बढ़ा तो स्वयं को अजेय समझने वाले अंग्रेजों को अपनी दुम दबाकर भागना पड़ा और भारत मां ने स्वतन्त्रता की सांस ली। नेताजी सुभाष, चन्द्रशेखर, बिस्मिल, भगतसिंह आदि अनेक बलिदानी आज भी हमारे लिए किसी ज्योति-स्तम्भ की तरह प्रेरणा का प्रकाश प्रवाहित कर रहे हैं। किसी भी कुरीति या कुनीति को ध्वस्त करने के लिए युवा-वर्ग की सक्रियता परम-आवश्यक है।

यह एक ध्रुव-सत्य है कि युवा-वर्ग रूपी तुफान में ऐसी शक्ति है कि वे असंभव को संभव बनाने की क्षमता रखते हैं। इसीलिए परमपिता परमात्मा ने सृष्टि का शुभारंभ भी युवाओं के द्वारा ही किया था। वे युवा ही थे जिन्होंने आदि सृष्टि में संघर्षों से जुझते हुए प्रारंभिक समस्त समस्याओं का समाधान किया था। आज समस्या चाहे समाज की हो, राष्ट्र की हो, चाहे विश्व की हो-इन समस्याओं का समाधान केवल युवा हाथों से ही होने वाला है। युवा-वर्ग को यह मानकर चलना होगा कि यदि धरंती पर स्वर्ग का निर्माण हो सकता है तो केवल और केवल उन्हीं के द्वारा हो सकता है। आज समाज, राष्ट्र और समूचा विश्व जिस बिखराव और आतंकवाद की जंजीरों में जकड़ा जा चुका है-केवल युवा-वर्ग ही इन जंजीरों को तोड़ सकने में समर्थ है। युवा-वर्ग ही है जो इस विस्फोटक और विनाशकारी हवाओं में पुन: सरसता और समरसता का अमृत घोल सकता है....

यहां एक बात की ओर संकेत कर देना बहुत अनिवार्य है कि युवा-वर्ग में एक जोश होता है और एक ऐसी ऊर्जा होती है जो अपने आप में असीम शक्ति रखती है मगर उसे उसका प्रयोग सही दिशा में ही करना चाहिए। इसलिए युवा-वर्ग साहस तो करे मगर सीमा लांघकर दु:साहस न करे। जोश के साथ होश अति आवश्यक है। गत वर्ष हिमाचल प्रदेश के मनाली नगर के पास चौबीस इंजीनियर युवा छात्र दु:साहस के कारण ही नदी के पानी में बह गए थे। डैम से पानी छोड़ने का तीन बार सायरन बजा, ग्रीमीणों ने आवाजें दे-देकर उन्हें नदी से बाहर आ जाने के लिए कहा मगर वे अपनी मस्ती में इतने बेखबर रहे कि इन चेतावनियों पर ध्यान नहीं दिया और देखते ही दु:साहस का शिकार हुआ था और देखते ही देखते पानी की तेज धार में बह गया था... साहस करें मगर अपनी सामर्थ्य, शक्ति और सीमा का भी ध्यान रखें। अपनी सीमाओं में रहकर यदि देश के संविधान का अनुपान करते हैं तो पुरस्कृत होते हैं मगर संविधान के उल्लंघन पर दण्डित किया जाता है। ठीक इसी प्रकार परमात्मा के संविधान तथा सृष्टि-नियम के अनुसार चलने पर तो व्यक्ति अपना चतुर्दिक विकास करते हुए आगे बढ़ता है मगर उसका उलंघन करने पर उसे दण्ड अवश्य ही भोगना पड़ता है। सत्य, न्याय और धर्म के जो दिशा निर्देश तथा वर्जनाएं हमारे ग्रन्थों में दी गई हैं उनका अनुपालन दृढ़तापूर्वक करना अपेक्षित है। उनका उलंघन करने पर उसका कुपरिणाम निश्चित ही भोगना पड़ता है। इसी युवा-वर्ग को चाहिए कि अपने मां-बाप तथा आचार्य की आज्ञाओं का भी अनुपालन करें अन्यथा उनका वह साहस दु:साहस की श्रेणी में चला जाएगा।

- महादेव, सुन्दरनगर जिला, मण्डी हिमाचल प्रदेश

हंसो और हंसाओ

- रवि शास्त्री, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

- **एक लड़का** टेटू बनवा रहा था और रो रहा था। मैं बोला-भाई साहब जब दर्द नहीं सहा जाता तो क्यूँ टेटू बनवा रहा है।
  लड़का-दर्द से नहीं रो रहा हूं भाई करीना लिखना था गधे ने कमीना लिख दिया है।
- **पूजा के समय-**
  पत्नी ने पति से पूछा-सूनो जी आपको आरती याद है न?
  पति-हाँ.... वो पतली सी, काली आंखों वाली सुन्दर सी, 402 में रहती है वही न
  फिर पहले पति की पूजा हुई सत्यनारायण भगवान बाद में पूजे गये।
- **नरेश**-शादी और सगाई के बीच कुछ दिनों का अंतराल क्यों रखा जाता है?
  सुरेश-ताकि कोई न कह सके कि मुझे हादसे से बचने का मौका नहीं दिया गया।

मानव एवं समाज के लिए घातक अन्धविश्वास

– दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली से प्रचारित लेख

मनुष्य अपनी छोटी-बड़ी सभी खुशियां जिनमें गाड़ी, मकान, पैसा या भौतिक सुख, आदि के लिए सरल रास्तों की तलाश करता है। अधिकतर यह होता है कि इन रास्तों में कदम-कदम पर रास्ता बताने वाले ओझा, पंडित, तांत्रिक बाबा और ज्योतिषी बैठे होते हैं जो इन छोटे रास्तों के लिए मोटी रकम वसूलते हैं। हासिल कुछ नहीं होता बल्कि जो पास में होता है वह भी चला जाता है। इसी कारण छोटे-छोटे रास्तों से मंजिल पाने की इन्सान की लालसा अक्सर उसे गहरे अंधकार के गड्ढे में धकेल देती है जहां से निकलना कठिन हो जाता है। इसे अंधविश्वास भी कहा जाता है। अन्धविश्वास का सीधा सा अर्थ यही है कि बिना सोचे समझे एक ऐसे सरल मार्ग की तलाश, जिसमें चाहे ईश्वर को पाना या कारोबार में सफलता, सुखमय जीवन अथवा संतान से लेकर धन की प्राप्ति आदि तक के लिए चल पड़ना...।

जानिए आज का भविष्यः– कुछ लोग अँधेरे और सुनसान रास्तों पर आपको चाकू-छुरी से डराकर आपका माल छीनते हैं जिन्हें लुटेरे कहा जाता है और कुछ लोग हर रोज टीवी, अखबारों से लेकर दुकान और चौराहे पर बैठकर आपको भविष्य के नाम पर डराकर पैसे हड़पते मिलते हैं। दरअसल यह कमजोर लोगों के मन का फायदा उठाने का सबसे सरल रास्ता है। यह लोग बड़ी आसानी से दो ग्रह-नक्षत्र आपके पक्ष में और दो ग्रह-नक्षत्र विरोध में खड़े कर देते हैं। विरोध वाले नक्षत्रों को आपके पक्ष में करने के लिए फीस भी वसूलते हैं। कुछ को सुबह-सुबह टीवी पर भी हर एक राशि का हिसाब-किताब बताते आसानी से देखा जा सकता है। कमाल देखिये! इस बीच बड़ी सफाई से नग, नगीने रूद्राक्ष आदि बेचने का कार्य भी होता है। भला किसी के कर्म में लिखा दुःख कोई मिटा सकता है या किसी के हिस्से की खुशी कोई छीन सकता है? सीधे-साधे लोग इसे नसीब, किस्मत, धर्म से जुड़ा काल चक्र समझकर अपनी कमाई का हिस्सा उन्हें सौंप देते हैं। असल में यह सीधा और मोटा व्यापार है। जहां इंसान को उसकी किस्मत से डराकर कीमत वसूल की जाती है। सोचिये! एक चाकू से डराकर पैसे वसूलता है दूसरा किस्मत से डराकर तो दोनों में अंतर क्या है?

शुभ या अशुभ मुहूर्त-मुहूर्त अर्थात् तिथि आदि का निर्धारण करना। लेकिन एक ही दिन में शुभ-मुहुर्त बताकर हजारों शादियाँ या संस्कार बता दिए जाते हैं। दरअसल यह मैरिज इण्डस्ट्रीज बन गई है जिस कारण, मंहगे वैंकट हॉल, फार्म हाउस, हलवाई से लेकर बैण्ड-बाजा और गाड़ियाँ बेहद महंगी हो जाती हैं। असल में समय, दिन और कलैण्डर की कोई भी तारीख शुभ-अशुभ नहीं होती। कई बार तो ऐसा भी देखा गया है कि पंडित द्वारा कोई अशुभ समय बताया गया हो परन्तु उस समय ऐसी कोई दुर्घटना नहीं होती, एक किस्म से यह भी भय का ही व्यापार है।

आखिर इस निश्चित शुभ-अशुभ समय का निर्धारण कौन करेगा, ईश्वर या ज्योतिषी-पंडित? जबकि मुहूर्त का सीधा अर्थ होता हैं किसी कार्य को करने के लिए जब मौसम अनुकूल हो, हमारे और रिश्तेदारों के पास पर्याप्त समय हो, सब परिवारजन साथ हों, बस यही सबसे अच्छा शुभ मुहूर्त होता है।

सोचिये!! हजारों रूपये देकर विवाह का शुभ मुहूर्त निकलवाया जाता हैं इसके बाद भी बारात आदि में कोई हादसा हो जाता है! तो क्या वह शुभ मुहूर्त कहलायेगा?

दिशा-शूल- हर रोज अखबारों आदि में यात्रा लाभ, दिशा-शूल (शुभ-अशुभ) बताई जाती है। असल में दिशा हमें भूगोल मौसम और मार्ग को समझने में सहायता प्रदान करती है। न कि वह शुभ-अशुभ होती है। यदि विशेष दिन में दिशा विशेष में नहीं जाना चाहिए तो उस दिन उस दिशा में जाने वाली सभी मोटरें, कारें, ट्रक, रेलगाड़ियां और वायुयान बन्द कर देने चाहिए, परन्तु हम देखते हैं कि रेलें और मोटरें प्रतिदिन प्रत्येक दिशा में जाती हैं। यदि दिशा-शूल का कोई प्रभाव होता तो उस दिन गाड़ियों की टक्कर होकर सारे यात्रियों की मृत्यु हो जानी चाहिए थी। क्या यह सीधे तौर पर व्यापार नहीं है?

सोचिए! यदि कोई हमें पूर्व दिशा में आज जाने से मना करे और किसी कारण हमारे किसी प्रिय के साथ अप्रिय घटना हो जाये यदि नजदीकी अस्तपाल पूर्व दिशा में हो तो हम क्या वहां नहीं जायेंगे?

नवग्रह पूजा- एक 50 ग्राम का पत्थर लीजिये उसे ज्योतिषी से 10 फिट दूर रखिये। उसे कहिये कि आप मन्त्रों की सहायता से इस पत्थर की दिशा या स्थान बदल दीजिए, यदि वह नहीं बदल पाए तो सोचिए कि पृथ्वी से करोड़ों मील दूर के विशालकाय ग्रह की दिशा कैसे बदली जा सकती है? अन्धविश्वास की कतार में यह भी एक बहुत बड़ा अन्धविश्वास है जिसके कारण कमजोर मन के लोगों से सालाना करोड़ों-अरबों रूपया लूटा जारहा है। सामान्य तौर पर इन ग्रहों से डराया जाता रहा है। जिनमें सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुद्ध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहू और केतू, जबकि विज्ञान में राहू और केतू तो ग्रह ही नहीं है। लेकिन इसके बाद भी यह काल्पनिक ग्रह आज लोगों के मन में इस तरह घर कर गये कि इनसे बचने के लिए तमाम तरह की पूजा और पैसे बहाए जा रहे हैं। क्या इन ग्रहों को पैसे की जरूरत है?

आज के युग में जब इंसान चांद पर उतर चुका है मंगल पर यान उतार चुका है और भविष्य में मंगल ग्रह पर स्वयं उतरेगा ऐसे युग में ग्रहों का डर इस कदर हावी है कि व्यक्ति ग्रहों को ठीक करने के लिए एक ऐसे ज्योतिषी के द्वार पर बैठते रहते हैं जिन्हें खुद का पता नहीं होता वह करोड़ों मील दूर के ग्रह 50 या 100 रूपये लेकर इधर-उधर कर रहे हैं?

सोचिए! जो पृथ्वी हमें अन्न से लेकर भोजन, पानी और साँस देती है जब वह हम पर हल्की भारी नहीं होती तो करोड़ों मील दूर के ग्रहों का भय क्यों?

तान्त्रिकों का खौफ-खून के आंसू रोने नहीं दूंगा, कोशिश आपकी समाधान हमारा, जैसा चाहोगे वैसा होगा, व्यापार में घाटा हो या सौतन दुश्मन से छुटकारा। कोई 5 मिनट में मनचाही लड़की पटाने के नाम पर युवाओं को बरगला रहा है। जमीन जायदाद का झगड़ा हो या परीक्षा में सौ फीसदी अंक सब का समाधान ज्योतिष बाबा के पास है। लिखा होता है मिलें मियां फलाने शाह या बाबा बंगाली से दरअसल यह सब भी इंसान के समस्त भय का खूब फायदा उठाते दिख रहे हैं। मनुष्य शिक्षाकी उन्नति और विकास के बावजूद भी अपने डर और वहम पर काबू नहीं पा सकता है। मनुष्य को हमेशा चमत्कार की तलाश रहती है इस कारण अपनी मानसिक कमजोरी को दूर करने की बजाय कदम-कदम पर बैठे तांत्रिकों के भ्रमजाल में फंस रहा है। जो बिना पैसे बात तक नहीं करते। जबकि सत्य यह है कि 10 मिनट के बाद उनके साथ क्या होने वाला है वे स्वयं नहीं जानते। यदि पढ़-लिखकर भी कोई इनके जाल में फंसता है तो क्या उसे पढ़ा लिखा कह सकते हैं?

सोचिए! वह आपका भय दूर करने के बजाय आपको और अधिक डराकर पैसे आदि तो नहीं लूट रहा है?

तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र- एक गृहणी ज्योतिषी से पूछकर अपने काम कर रही है, बाप कारोबार या नौकरी ज्योतिष के बताये रास्ते पर कर रहा है और बेटे-बेटी को कह रहे है पढ़ ले बेटा! भला वे बच्चे क्यों पढ़ेंगे? वो भी ज्योतिषी से कुछ रूपये देकर सारे दोष दूर कर लेंगे? तंत्र-मंत्र, झाड़-फूंक, अपना-पराया, श्री यंत्र, धन-लक्ष्मी यंत्र, गंडे-ताबीज, काले धोग, नजर रक्षा कवच, दुर्घटना नाशक कवच आदि हमारे सुरक्षा कवच के नाम पर अंधविश्वास का बाजार कहो या बाबाओं का सुपर मार्केट हर कोई अपना माल बेच रहा है।

आज टी.वी. चैनलों व विभिन्न राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं ने पाखण्डी बाबाओं द्वारा विज्ञापनों के माध्यम से दुःख दर्द से पीड़ित भोली-भाली जनता को मजबूरन अन्धविश्वास की ओर धकेलने के लिए विभिन्न प्रकार के भय निवारण एवं दुःख निवारण तथा धन की अथाह वर्षा करने वाले श्री धन-लक्ष्मी यन्त्र आदि का प्रचार धुंआ-धार व धड़ल्ले से बेरोकटोक किया जा रहा है।

सोचिए! इन यंत्रों के प्रचार से औरं इनकी बिक्री से किसको फायदा हो रहा है? कंपनियों को, टीवी और समाचार पत्रों को या आपको?

शनि देव, शनि की साढ़े साती और अंध विश्वास- पहले यह जानिए शनि क्या है जैसे पृथ्वी निर्जीव ग्रह है। ऐसे ही शनि भी एक ग्रह है लेकिन विज्ञान में पढ़कर भी लोग आसानी से इसे देवता

समझने लगे हैं और धरती से करोड़ो मील दूर एक सामान्य ग्रह से भी कमजोर लोग डरे खड़े हैं। लोहे के कटोरे में तेल भर कर उसमें अपनी छवि देखें और उसको किसी भिखारी या शनि मंदिर में दे दें। यह एक ऐसा अन्धविश्वास है जिसे लोग सोचते हैं एक कटोरी तेल से क्या फर्क पड़ता है? परन्तु आप खुद सोचिए! शनि मंदिर के सामने लम्बी कतारों में भक्तजन तेल की शीशी हाथ में लिए दिखाई पड़ते हैं इसके बाद प्रत्येक शनिवार को सड़कों पर, सार्वजनिक स्थलों, अस्पतालों के सामने, एक-एक किलो मीटर की दूरी पर शनि देवता विराजमान हैं। यदि अकेली दिल्ली का ही आंकड़ा देखें तो हजारों किलो तेल हर महीने इन लोगों के पास जाता है। शाम को पैसे और तेल अलग-अलग होता है। यह जो भी तेल, आटा, पैसे इत्यादि हम शनिदेव को चढ़ाते हैं क्या वास्तव में वह शनिदेव तक पहुँचता है? यदि नहीं तो जाता कहाँ है? क्या यह उन पंडितों की आजीविका का साधन नहीं है? हम भी मानते हैं धर्म जरूरी है पर यह भय का ढोंग क्यों?

सोचिए! यदि आपको ईश्वर पर विश्वास है तो एक निर्जीव ग्रह से भय कैसा?

भूत-प्रेत का भ्रम- देश से बाहर जितने लोग बम विस्फोट या बीमारी से मरते हैं उससे कहीं अधिक तो हमारे यहाँ भूत-प्रेत, जादू टोना, डायन आदि के नाम पर मर जाते हैं। हमें भूत-प्रेत आदि से डर क्यों लगता है? हमारा अवचेतन मन कभी-कभी भय पैदा करता है इसे आप मनोविज्ञान की दृष्टि से भी जान सकते है अपने चेतन मन के साथ खड़े रहिये इसके बाद खड़े किये गये काल्पनिक भय निकट नहीं आयेंगे! भूत-प्रेत के साथ-साथ डायन व चुड़ैल के नाम से भी अंधविश्वास फैला हुआ है। जो गरीब व अनपढ़ युवतियों को, महिलाओं को ज्यादा परेशान कर रहा होता है, जिसका कोई अस्तित्व ही नहीं है। धन लोलुप ओझा, तांत्रिक व पाखंडीबाबा इस स्थिति का लाभ उठाकर भोले-भाले लोगों को नहीं लूटते?

सोचिए! ईश्वर की व्यवस्था कमजोर नहीं है कि कोई जीव शरीर छोड़ने के बाद दूसरी किसी आत्म-प्राणी को परेशान कर सके।

वास्तु दोष और वास्तु-शास्त्र-वास्तु शास्त्र वह विज्ञान है जो भवन निर्माण में आवश्यक है। इससे उनका मुख्य आशय भवनों को मजबूत हवादार, सूर्य की किरणों के प्रवेश तथा अलग-अलग कार्यो हेतु अलग-अलग प्रकार के कमरे निर्मित करने का है। यह कहीं नहीं लिखा कि इससे विपरीत कर देने से अनष्टि होगा। अब देखिये अनिष्टों को दूर करने के अनुष्ठान भी चल पड़े हैं। वास्तु दोष के नाम पर दिशाओं का प्रभाव लोगों के घरों पर, कार्यालयों और कारखानों में घुसने लगा है। अपने पुरुषार्थ और भाग्य पर भरोसा न करके अपने दु:खों का, आर्थिक हानि और पराजय का कारण अपने कमरों की दीवारों, कोनों और दिशाओं में शूल ढूंढने लगे हैं। वास्तु शास्त्र के ज्ञाता के नाम पर लोगों का धंधा प्रचलित हो गया है। सामान्य सिद्धान्त यह है कि पुरुषार्थ और भाग्य के फलस्वरूप व्यक्ति का फलादेश बदलता रहता है। किसी शुभ बदलाव का श्रेय तथाकथित वास्तु पंडितों को देना अंधविश्वास को बढ़ावा देना है।

सोचिए! वैज्ञानिक महत्व को स्वीकार कीजिए, आपकी मेहनत की कमाई को वास्तु दोष के नाम पर कोई कैसू लूट रहा है?

गुरुडम-शास्त्रों में प्रत्येक मनुष्य के लिए गुरु का बड़ा ही महत्व बताया गया है। आध्यात्मिक क्षेत्र में जो आत्मिक, उन्नति हेतु सद्ज्ञान व शास्त्रों की बातें बताता है, वह गुरु कहलाता है। शिष्यों को आत्मा-परमात्मा का ज्ञान देकर संवारता है।

वर्तमान काल में गुरुओं का बोलबाला हो गया है। गुरुओं की अनेक दुकानें खुल गई हैं। भोली-भाली जनता गुरुओं के भ्रमजाल में फंसी हुई है। ईश्वरीय पूजा के स्थान पर अपनी पूजा करवाते हैं। गुरु बनाने के नाम पर बहुत से लोग विशेषकर महिलायें भेड़-चाल की तरह तथाकथित गुरुओं की सेवा में स्वयं को अर्पित करके अनेक प्रकार की प्रताड़ना व शोषण का शिकार होती हैं। परिणाम स्वरूप समाज में अनेक के पाप कर्म बढ़ते जाते हैं बाद में ऐस गुरुओं के कारनामों का भंडाफोड़ भी होता है।

सोचिए! गुरु वह है जो नि:स्वार्थ भाव से शिष्य की वास्तविक उन्नति के लिए कार्य करता है या वह जो अपने-अपने शिष्यों के तन-मन धन का शोषण करता है?

मांगलिक दोष-विवाह सम्बन्ध में अक्सर मांगलिक दोष आड़े आताहै। लड़का-लड़की मंगली है अक्सर कुंडली मंगल दोष बताकर शादी-विवाह जैसे पवित्र बंधन बाधा उत्पन्न की जाती है। पण्डित/पुरोहित मंगली लड़का/लड़की को मंगल दोषमुक्त करने के नाम पर एक मोटी रकम लेकर उसकी शादी पहले किसी पेड़ या कुत्ते-बिल्ली आदि से कर दोष निवारण करने का ढोंग रचते हैं।

सोचिए! इस आधुनिक समाज में कुंडली मिलाने से बेहतर है कि लड़के-लड़कियों की सोच, शिक्षा, पारिवारिक विचारधारा, खान-पान आदि का मिलान हो? अन्धविश्वास के इस मांगलिक दोष नामक पाखण्ड से हर वर्ष कितने युवाओं के सपने और घरों को बर्बाद करता है।

जागरण भक्ति या मनोरंजन?-देवी मां, सांई बाबा, गुरु गोरखनाथ आदि के नाम पर होने वाले जागरण सनातन धर्म की कोई प्राचीन परम्परा का हिस्सा नहीं बल्कि पिछले दो दशकों में धर्म के नाम पर कमाई करने का जरिया बन गया है, जिसमें पण्डों से लेकर बेसुरे गायकों तक को मोटी रकम प्राप्त होती है। हम अपने दिमाग पर जोर डालकर यह अवश्य सोचें कि वास्तव में शांति, मनन या ध्यान ईश्वर को पसन्द है अथवा फूहड़ बेसुरे संगीत पर पूरी रात नाचना, गाना व कूदना? जागरण भक्ति है या मनोरंजन/कमाई का साधन मात्र है? आखिर यह सब भारत में ही क्यों?

सोचना आपको है! यदि यह भक्ति है तो हमारे ऋषि, मुनि वनों में क्यों जाते थे? क्या एकांत से अच्छी ईश्वर की कोई दूसरी भक्ति हो सकती है? ईश्वर दर्शन के लिए योग शास्त्र में एकाग्रता को ही प्रमुख साधन के रूप में क्यों बल दिया गया है?

सत्य-असत्य को जानो- सभी जिज्ञासु मित्र, माताएं, बहनें इस विश्लेषण के द्वारा ही समझ सकते हैं कि यह सब अन्धविश्वास है मात्र ज्योतिषियों द्वारा अपने ठगी के धन्धे के लिए ही बनाया गया है इसका कोई भी वैज्ञानिक आधार नहीं है। यदि कोई त्रिकालदर्शी, डिग्रीधारी, महाज्ञानी ज्योतिषी इन सिद्धांतों को सही सिद्ध करना चाहे तो आकर चर्चा कर सकते हैं। हम सभी विषयों पर खुला चेलेंज करते हैं। जो डरा नहीं, हम उसके बारे में नि:संकोच कह सकते हैं कि उसने कुछ नया किया ही नही। डर तो लगेगा, डर लगना स्वाभाविक है क्योंकि यह इस बात का संकेत है कि आप कुछ नया करने जा रहे हैं, नया कहने जा रहे हैं। चाहे आप उस को को करने में सफल रहते हों या असफल हो जाते हैं। निष्कर्ष सदैव फलदायी होता है। इसलिए नए काम को करने से मत डरिये बल्कि उन्हें करिये। ऐसे कार्यो का सृजन कीजिए, जिनकी शुरुआत करने में डर लगता है। बस अन्धविश्वास के दो डर होते हैं।

अनमोल वचन

❖अपने जीवन का एक लक्ष्य बनाओ, और इसके बाद अपना सारा शारीरिक और मानसिक बल जो ईश्वर ने तुम्हें दिया है, उसमें लगा दो। **-कालाईल**

❖जिसको लगन है वह साधन भी पा जाता है, यदि नहीं पाता तो वह उन्हें पैदा करता है। **-चैनिग**

❖लगन को काँटो की परवाह नहीं होती।-**प्रेमचन्द**

❖अत्याचारी से अभागा व्यक्ति कोई दूसरा नहीं होता क्योंकि विपत्ति के समय उसका कोई मित्र नहीं होता। **- शेख सादी**

❖दुनिया का अस्तित्व शस्त्रबल पर नहीं, बल्कि सत्य, दया और आत्मबल पर है। **- महात्मा गांधी**

❖क्रोध से शुरू होने वाली हर बात लज्जा से समाप्त होती है। **- बेंबामिन फ्रेंकलिन**

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं-

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

ऋषिभक्त, देशभक्त और आर्यसमाज भक्त शहीद रामप्रसाद बिस्मिल जयन्ती के शुभ अवसर पर

आज की युवापीढ़ी स्वतन्त्र भारत व आधुनिक युग के निर्माता देशभक्तों को भूल चुकी है जिनकी देश भक्ति, त्याग व बलिदान के कारण आज हम स्वतन्त्र वातावरण में सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हमें यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि आज की युवा पीढ़ी प्रायः धर्म, जाति व देश के प्रति अपने कर्तव्यों के प्रति सजग नहीं है वा विमुख है। यह आश्चर्य है कि हमें देश-विदेश के क्रिकेट आदि खिलाड़ियों, फिल्मी अभिनेताओं, बड़े-बड़े घोटाले व भ्रष्टाचार करने वाले राजनीतिज्ञों के नाम व कार्यों के बारे में तो ज्ञान है परन्तु जिन लोगों ने अपने जीवन को बलिदान करके देशवासियों को गुलामी व अपमानित जीवन जीने से बचाया है, उन्हें हम भूल चुके हैं। इसे देशवासियों की उन हुतात्मा बलिदानियों के प्रति कृतघ्नता ही कह सकते हैं। ऐसा क्यों हुआ? इसका सरल उत्तर है कि स्वतन्त्रता के बाद देश में जो वातावरण बना और नैतिकता, देश भक्ति व योग को शिक्षा पद्धति में अनिवार्य विषयों में सम्मिलित नहीं किया, उसके कारण ही ऐसा हुआ है। आज की युवा पीढ़ी ने स्वदेशी सभी अच्छी चीजों को छोड़ दिया है और पाश्चात्य अच्छी व बुरी सभी चीजों को अविवेकपूर्ण ढंग से अपनाया है व अपनाती जा रही है। ऐसे प्रतिकूल वातावरण में शहीदों के जन्म व बलिदान दिवस में हमें अवसर देते हैं कि हम तत्कालीन परिस्थितियों में उनके द्वारा किए गये कार्यों पर दृष्टिपात कर उनका मूल्यांकन करें व उनसे शिक्षा व प्रेरणा ग्रहण कर अपना कर्तव्य निर्धारित करें। भारत माता को विदेशी आक्रान्ताओं से, जो देशवासियों को पल-प्रतिपल अपमानित करते थे, जिनके शासन में हमारा प्राचीन वैदिक सनातन धर्म व संस्कृति सुरक्षित नहीं थे, जो देश की सम्पदाओं को लूटते थे, देशवासियों के श्रम का व उनका बौद्धिक शोषण करते थे, जिन्होंने हमारी अस्मिता को अपने अहंकार व द्वेष-बुद्धि से कुचल दिया था, उन क्रूर शासकों से देश को मुक्त कराने के लिए जिस भारतमाता के वीर सपूत ने अपना तन, मन व धन मातृभूमि की स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर अर्पित किया था, उस नरपुंगव का नाम है पं. रामप्रसाद बिस्मिल। शहीद बिस्मिल ने 29 वर्ष की भरी जवानी में 19 दिसम्बर, 1927 को फांसी के फन्दे को चूम कर अपना बलिदान दिया। उनके जीवन पर दृष्टि डालने पर ज्ञात होता है कि उनके जीवन का उद्देश्य विदेशी शासक अंग्रेजों की पराधीनता से देश को मुक्त कर सभी देशवासियों के प्राचीन धर्म व संस्कृति की रक्षा, सम्मानजनक जीवन के साथ देश की एकता व अखण्डता की रक्षा करते हुए सबकी शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक व आत्मिक उन्नति करना एवं वैदिक आदर्श सत्य व न्याय पर आधारित शासन स्थापित करना था।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल के पिता श्री मुरलीधर, चाचा श्री कल्याणमल तथा पितामह श्री नारायणलाल थे। आप चार भाई व पांच बहने थी जिनमें आप सबसे बड़े थे। पिता कुछ शिक्षित थे। ग्वालियर से आकर शाहजहांपुर, संयुक्त प्रान्त में बसे थे। मुरलीधरती ने पहले नगर पालिका में 15 रूपये मासिक पर सर्विस की और इसके बाद कोर्ट में स्टाम्प पेपर बेचने का काम किया। आपके परिवार में पुत्रियों को जन्म लेते ही मार दिया जाता था परन्तु आपके पिता ने यह कुकृत्य नहीं किया यद्यपि आपके दादाजी का पुत्रियों की हत्या करने का परामर्श था। पं. रामप्रसाद जी का जन्म 11 जून सन् 1897 को हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा हिन्दी व उर्दू में हुई। अपनी धर्म पारायणा माताजी की प्रेरणा से आपने अंग्रेजी भी सीखी। बचपन में आपको अनेक बुरे व्यस्न लग गये। शाहजहांपुर में घर के पास ही आर्यसमाज मन्दिर था, वहां आप जाने लगे। मन्दिर के पण्डितजी ने आपको ब्रह्मचर्य व व्यायाम के बारे में बताया और उसका पालन करने को कहा जिससे आपको सही दिशा मिली। आर्यसमाज मन्दिर में आपको श्री इन्द्रजीत जी का सत्संग प्राप्त हुआ। उन्होंने आपको ईश्वर का ध्यान करना व महर्षि दयानन्द रचित सन्ध्या करना सिखाया। उनकी प्रेरणा से आपने सत्यार्थप्रकाश पढ़ा। सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से आपके सारे व्यस्न छूट गये और आपमें देशप्रेम व देश को स्वतन्त्र कराने की प्रबल भावना उत्पन्न हुई। आपका स्वास्थ्य जो पहले खराब रहता था अब सन्ध्या, व्यायाम व योगाभ्यास से दर्शनीय हो गया। हमें आर्यसमाजी मित्र, आर्य विद्वान् प्रो. अनूप सिंह से ज्ञात हुआ था कि आप अपने भव्य, प्रभावशाली व आकर्षक शरीर के कारण दूर-दूर तक प्रसिद्ध हो गये। लोग दूर-दूर से आपकी प्रशंसा सुनकर आपको देखने आने लगे।

पं. रामप्रसाद बिसिल्ल जी को आर्यसमाज के सम्पर्क में आने से पूर्व अनेक दुर्व्यसन लग गये थे। दुर्व्यसनों के लिए पैसे चाहिए। इसके लिए वह पिता के पैसे भी चोरी कर लेते थे। दुर्व्यसनों को छुपकर किया जाता है, इसलिए अन्यों पर वह प्रायः प्रकट नहीं होते हैं। पं. रामप्रसाद जी धूम्रपान, भांग का सेवन, चरित्र बिगाड़ने वाले उपन्यासों को पढ़ना व निरर्थक घूमना-फिरना व उसमें समय नष्ट करना जैसे लक्ष्य से भटके मनुष्य की भांति कार्य करते थे। जब रामप्रसाद जी का भाग्योदय हुआ तब आप संयोग से आर्यसमाज के सम्पर्क में आये। यहां आर्यों की संगति व उनसे मिलने वाले तर्क पूर्ण सुझावों ने आपको प्रभावित करना आरम्भ किया। व्यस्नों से जीवन को होने वाली हानि का स्वरूप आप पर प्रकट होने से उनके प्रति अरूचि हो गई। हमने इस अल्प जीवन में अनेक लोगों को उठते हुए भी देखा है और वेदों व सत्यार्थ प्रकाश पढ़े व दूसरों को सदाचारी व आर्य बनाने वाले को नाना प्रकार के बुरे कार्य करते हुए भी पाया है जिनसे चरित्र का पतन होता है। यह सामान्य बात है, ऐसी घटनायें समाचार पत्रों व टीवी आदि पर भी यदा-कदा देखने को मिलती रहती हैं। रामप्रसाद जी में जो दुर्गुण थे वह अज्ञानता, मन के नियन्त्रित न होने व इन्द्रियों के दास बनने के कारण उत्पन्न हुए थे, उनका दूर होना सरल था। उन्हें इनके दुष्प्रभावों का ज्ञान हुआ तो उन्होंने इसे त्याग दिया और इनके त्याग से आत्मा की शुद्धि प्राप्त करके एक अज्ञात युवा महात्मा बन गये या महात्मा बनने के मार्ग पर तेजी से बढ़ चले।

आर्यसमाज में सन्ध्या, हवन, वहां के सच्चरित्र सदस्यों एवं विद्वानों के उपदेशों, उनकी संगति, वार्तालाप व उनकी सेवा का आप पर ऐसा प्रभाव हुआ कि आर्यसमाज में रहकर आप अपना अधिक समय व्यतीत करने लगे। पिता आर्यसमाज के वास्तविक स्वरूप से अपरिचित थे। उन्हें अपने पुत्र रामप्रसाद का वहां अधिक समय व्यतीत करना अच्छा नहीं लगता था। इससे वह उनसे क्रुद्ध हो गये। उन्होंने रामप्रसादजी को वहां जाने से मना किया और अपशब्द कहकर धमकी भी दी की सोते समय उसका गला काट देगें। इस कारण घर से भी उन्हें निकाल दिया। इस कठिन परीक्षा में, जिसे छोटी अग्नि परीक्षा भी कह सकते हैं, हमारे पं. रामप्रसद बिस्मिल जी पुरी तरह सफल हुए। यदि वह पिता के अनुचित सुझाव को मान लेते तो उनका जीवन निरर्थक होता और इतिहास में उनकी शहादत की जो युगान्तरकारी घटना घटी, वह न हुई होती। यहां हम स्वामी श्रद्धानन्द के उदाहरण को भी स्मरण कर सकते हैं जब युवावास्था में नास्तिक मुंशीराम, श्रद्धानन्द कहलाने से पूर्व का नाम, के पौराणिक व अन्धविश्वासों को मानने वाले पिता नानक चन्द बरेली में महर्षि दयानन्द के सत्संग में लेकर जाते हैं, इस आशा के साथ कि स्वामी दयानन्द के सत्संग व उपदेश के प्रभाव से इसकी नास्तिकता समाप्त हो जायेगी। महर्षि दयानन्द के सत्संग से उनकी नास्तिकता भी समाप्त हुई, सारे दुर्व्यसन भी समाप्त हुए और एक दुर्व्यसनी युवक आगे चलकर अपने युग का युगपुरुष बन गया जिसका स्मारक गुरुकुल कांगड़ी आज भी अतीत के स्वर्णिम कार्यों को संजोये हुए उनकी साक्षी दे रहा है।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल जी को मुंशी इन्द्रजीत से सत्यार्थप्रकाश पढ़ने को मिला। सत्यार्थप्रकाश से आपको ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति, धर्म, कर्म, यज्ञ, सन्ध्या, जीवन-मृत्यु के रहस्य, पुनर्जन्म, सुख, दुःख, बन्धन, मोक्ष, देश भक्ति, मातृभूमि से प्रेम, उसकी सेवा,माता, पिता, गुरुजनों, सज्जनों, वृद्धों की सेवा, मत मतान्तरों का वास्तविक ज्ञान व उन सबमें सत्य व असत्य मान्ताओं का मिश्रण, धर्म केवल एक है जिसमें सर्वांश सत्य होता है, असत्य बिल्कुल नहीं होता आदि का ज्ञान हुआ एवं मूर्तिपूजादि पोषित पौराणिक वा कथित सनातन धर्म सहित बौद्ध, जैन, नास्तिक मत, ईसाई व इस्लाम मत की अवैदिक व अविवेकपूर्ण बातों का ज्ञान भी हो गया। इतना ज्ञान होना, इसके धारण की भावना का होना, इनकी इच्छा, संकल्प, प्रयत्न करना व इससे सहमत होना-यह सब एक महात्मा के लक्षण हैं। रामप्रसाद बिस्मिल भी इसके साक्षी बने व इन्हें अपने जीवन में धारण किया।

आर्यसमाज, शाहजहांपुर में एक बार एक आर्य संन्यासी स्वामी सोमदेव जी का आगमन हुआ। स्वामीजी धार्मिक विद्वान होने के साथ-साथ देश की परतन्त्रता व उसके परिणामों से व्यथित थे। आपको इनका सत्संग प्राप्त हुआ। सत्यार्थप्रकाश, आर्याभिविनय, संस्कृत वाक्य प्रबोध एवं व्यवहार भानु जैसे ग्रन्थों को पढ़कर देश को आजाद कराने के बीजों का वपन तो आपको हृदय में हो ही चुका था। उनको खाद व पानी स्वामी सोमदेव जी के सत्संग, वार्तालाप व सेवा से प्राप्त हुआ। उनके परामर्श से आपने देश की आजादी के

लिए कार्य करने का अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। आर्य मनीषी डॉ. भवानी लाल भारतीय ने लिखा है कि स्वामी सोमदेव जी की शिक्षाओं से प्रभावित होकर रामप्रसाद बिस्मिल ने प्रतिज्ञा की, ''अंग्रेजी साम्राज्य का नाश करना मेरे जीवन का प्रमुख लक्ष्य होगा।' इस प्रतिज्ञा के बाद आपने युवकों का एक संगठन बनाया। इस संगठन की योजनाओं को पूरा करने के लिए शस्त्रों की आवश्यकता थी और उन्हें खरीदने के लिए धन चाहिए था। आपने धन की प्राप्ति के लिए एक पुस्तक लिखी जिसका नाम था-'अमेरिका को स्वतन्त्रता कैसे मिली?' इसकी बिक्री से प्राप्त धन अपर्याप्त था। दूसरा उपाय यह किया कि पास के एक गांव पर सशस्त्र हमला कर धन लूटा गया। यह ध्यान रखा गया कि किसी की भी शारीरिक क्षति नहीं पहुंचानी है। पराधीन भारत माता को आजाद करने के लिए उसी की सन्तानों से धन प्राप्त करने का उस समय उन्हें यही तरीका दिखाई दिया। इस घटना से आप पुलिस की जानकारी में तो आ गये परन्तु गिरफ्तारी से बचते रहे। सन् 1920 में राजनैतिक कैदियों व अन्य अपराधियों को आम माफी दिये जाने के बाद आपके नाम जारी वारण्ट भी रदद् हो गया। तब आप अज्ञात स्थान से शाहजहांपुर आ गये। जब आपके युवकों का सशस्त्र दल बनाया तो सुप्रसिद्ध देशभक्त, शहीद व आपके अभिन्न मित्र अशफाक उल्ला खां भी आपके सम्पर्क में आये। दोनों में पक्की दोस्ती हो गई। अशफाक को अपने मित्र बिस्मिलजी को बहुत निकट से देखने का अवसर मिला। वह भी आर्यसमाज मन्दिर में आने लगे। हम अनुमानतः कह सकते हैं कि उन्होंने आर्यसमाज के सत्यस्वरूप को काफी हद तक समझा था। एक बार कुछ मुसलमानों ने आर्यसमाज पर आक्रमण कर दिया। अशफाक उल्ला उस समय आर्यसमाज मन्दिर में पं. रामप्रसाद बिस्मिल के साथ ही थे। अशफाक ने रामप्रसाद जी के साथ मिलकर आक्रमणकारियों को ललकारा था और उनके मंसूबे विफल कर दिये थे। इस मित्रता को सच्ची मित्रता कह सकते हैं और हिन्दू-मुस्लिम संबंधों की एक अच्छी मिसाल भी। इन दोनों की मित्रता के अनेक प्रसंग हैं, जो प्रेरणाप्रद हैं।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल उर्दू-फारसी के प्रसिद्ध कवि भी थे। आपकी रचनायें आजादी के आन्दोलन के दिनों में सभी लोगों की जुबान पर होती थी। आज भी उनमें ताजगी है, देश प्रेम व हृदय को छू लेने की उनमें अवर्णनीय क्षमता है। नमूने के रूप में कुछ पर दृष्टि डालते हैं। फांसी के फन्दे को चूमने से पूर्व उन्होंने कहाथा-'मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे। बाकी न मैं रहूं और न मेरी आरजू रहे।। जब तक कि मन में जान रगों में लहू बहे। तेरा ही जिक्र और तेरी जुस्तजू रहे।।' भारतमाता के प्रति अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए आपने लिखा था-'यदि देश हित मरना पड़े मुझको सहस्त्रों बार भी। तो भी न मैं इस कष्ट को निज ध्यान में लाऊँ कभी।। हे ईश भारत वर्ष में शत बारमेरा जन्म हो। कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।।'' देश प्रेम पर उनकी पंक्तियां हैं-''हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रहकर, हमको भी पाला था मां-बाप ने दु:ख सह-सह कर। वक्ते रूखसत उन्हें इतना भी न आये कहकर, गोद में कभी आंसू बहें जो रूख से बहकर।। तिफ्ल उनको ही समझ लेना जी बहलाने का। देश सेवा का ही बहता है अब तो लहू नस-नस में। हमने जब वादि-ए गुरबत में कदम रखा था। दूर तक यादें वतन आई थी समझाने को।'' उनकी पंक्तियों 'सर फरोसी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजू-ए कातिल में है।' पर तो एक फिल्मी गीत बन चुका है जो कभी देश के बच्चे-बच्चे की जुबान पर होता था। मृत्यु दण्ड से पूर्व उन्होंने लिखा-'मरते बिस्मिल, रोशन, लाहिड़ी, अशफाक अत्याचार से, पैदा होगें सैकड़ों इनके रूधिर की धार से।'

अन्याय करना व अन्याय सहना दोनों ही गलत हैं। अंग्रेज देशवासियों पर अमानवीय अत्याचार करते थे। जाते-जाते भी वह देश का विभाजन करा गये और इस बात का भी प्रयास किया कि खण्डित भारत सबल देश न बन सके। पं. रामप्रसाद बिस्मिल जी भारतीयों पर अंग्रेजों के अन्याय को दूर कर देशवासियों के लिए सम्मान, ईश्वर व प्रकृति प्रदत्त समानता व स्वतन्त्रता के अधिकारों को सभी सामाजिक बन्धुओं व देशवासियों को दिलाना चाहते थे। इसी विचारधारा ने उन्हें सशस्त्र क्रान्ति का नायक बनाया। हम जब विचार करते हैं कि कोई यदि किसी की सम्पत्ति को छीन लें या उसकी अचल सम्पत्ति पर कब्जा कर लें, तो उस अन्यायकारी को कैसे हटा कर सम्पत्ति को मुक्त कराया जाये? इसके दो ही तरीके हैं कि पहले उसे बताया व समझाया जाये कि उसने गलत किया है, वह सम्पत्ति लौटा दें। प्रायः सम्पत्ति छीनने वाला व लूटने वाला अधिक बलवान होने के कारण सत्य के

आग्रह करने पर सम्पत्ति लौटाता नहीं है। यदि ऐसा होता तो चीन ने हमारी भूमि अब तक हमें लौटा दी होती। पाकिस्तान ने अनधिकृत कश्मीर हमें सौंप दिया होता। यहां तो अन्य भागों पर भी कब्जा करने के मंसूबे बनायें जाते हैं और गुप्त रूप से उन पर कार्य भी किया जाता है जिसमें सेना के हमारे निर्दोष लोग अपने प्राणों से हाथ धो बैठते हैं। जनता के हाथ में ताकत तो होती नहीं। वह सरकार की ओर देखती है। छीनी गई अपनी सम्पत्ति को अपने शत्रु से लेने का दूसरा तरीका केवल बल प्रयोग ही बचता है। यही तरीका बाद में महान देशभक्त नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने भी अपनाया जिसको सारे देश ने समर्थन दिया। उनका नारा-''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।' आज भी कानों में गूंज जाता है। ऐसा ही कुछ हमारे देशभक्त क्रान्तिकारी सोचते थे कि कैसे अपने अपमान को रोका जाये, हमें उचित अधिकार प्राप्त हों और देश स्वतन्त्र हो। उनके द्वारा अपनाया गया मार्ग गलत नहीं था।

पं.रामप्रसाद जी के सामने पृष्ठ भूमि कुछ अलग रही होगी। उन्होंने निर्णय किया कि शस्त्रों के लिए धन की जो आवश्यकता है उसे सरकारी खजाने का लूट कर पूरा किया जाये। वस्तुतः खजाने का धन भी जनता व देशवासियों का ही धन भी जनता व देशवासियों का ही धन भी जनता व देशवासियों का ही धन था। योजनता बनाई गई और उसके अनुसार 9 अगस्त, सन् 1925 की रात्रि को जब एक रेलगाड़ी लखनऊ के निकट काकोरी स्टेशन पर पहुंची, तो उसे रोक कर उसमें सरकारी खजाने से 10000 रूपये लूट लिए गये। यह घटना अपने आप में ही अत्याचारी अंग्रेजों के लिए एक सबक था कि उनके लाख प्रयत्नों, लोगों को दबाने व कुचलने के बाद भी ऐसी घट गई। इससे बौखला कर घटना में शामिल देशभक्तों की धर पकड़ का अभियान चला। पं. रामप्रसाद बिस्मिल पकड़ लिये गये। उन पर दबाव डाला गया कि वह अपने सभी साथियों के नाम बताये। उन्हें निष्कटतम् यातनायें दी गई। वह सब उन्होंने अपनी देशभक्ति के कारण सहन की। सरकार की ओर से दिखावे का मुकदमा चलाया गया और उन्हें मृत्यु दण्ड के रूप में फांसी की सजा दी गई। उनके अन्य साथियों अशफाक उल्ला खां, रोशन सिंह व राजेन्द्र लोहिड़ी को भी फांसी की सजा दी गई। हम जब विचार करते हैं तो हमें लगता है कि यह लोग अपनी मातृभूमि से प्रेम करते थे। उसे आजाद कराना चाहते थे। अंग्रेजों द्वारा जो भारतीयों का अपमान किया जाता था उसका यह लोग विरोध करते थे। इस सबका तो इन्हें पारितोषिक मिलना चाहिए था। यदि वस्तुतः अंग्रेज न्यायप्रिय होते तो कदापि इन देशभक्त युवकों को सजा न देते। अपने देश में भी तो वह इसी प्रकार से देश भक्ति के कार्य करते हैं। इससे यह सिद्ध है कि सत्य व न्याय का कोई गुण हमारे तत्कालीन शासकों में नहीं था।

हमें देश के उन तत्कालीन बड़े नेताओं से भी शिकायत हैं जो इन युवकों को फांसी दिए जाने पर मौन व खामोश थे। इतना तो कह ही सकते कि यह निर्णय गलत है। पं. रामप्रसाद बिस्मिल को काल कोठरी में रखा गया। वहां का वातावरण पशुओं से भी बदतर था। इस पर भी उन्होंने वहां योग साधना की और यह एक सुखद आश्चर्य है कि उस दूषित वातावरण में जहां मनुष्य जीवित नहीं रह सकता, उनके शरीर का भार घटने के स्थान पर बढ़ा। वहां रहते हुए उन्होंने अपनी आत्मकथा भी लिखी, जो सौभाग्य से उपलब्ध है और सभी युवक व वृद्धों के लिए पठनीय है। इस प्रेरणादायक आत्मकथा को स्कूली शिक्षा में सम्मिलित किया जाना चाहये था जिससे युवा पीढ़ी देशभक्त बनती। परन्तु कहें किसे, सर्वत्र अहितकर वातावरण है। अब से 88 वर्ष पहले, 19 दिसम्बर, सन् 1927 को उन्हें गोरखपुर में फांसी पर चढ़ाया गया था। फांसी दिये जाने के दिन प्रातः उठकर उन्होंने स्नान कर व्यायाम व सन्ध्या की और हवन किया। फांसी के फन्दे पर खड़े होकर अपनी इच्छा व्यक्त की और कहा- 'I wish the downfall of British Empire.' यह कहकर वेदमन्त्र 'ओ३म् विश्वानिदेव सवितरदुरितानि परासुव यद् भद्रं तन्न आ सुव।' कह कर फांसी पर झूल गये। इस समय बिस्मिल जी की आयु लगभग 29 वर्ष थी। देश को आजाद कराने की उनकी भावना आंशिक रूप से 15 अगस्त, सन् 1947 को पूरी हुई। आजाद होने पर भी उनक स्वप्नों के अनुरूप देश नहीं बन सकता। आज भी सत्य व न्याय पर आधारित अध्यात्म ज्ञान से सम्पन्न देश के निर्माण का कार्य शेष है जो कालान्तर में पूरा होगा। युवा पीढ़ी उनके जीवन से प्रेरणा ग्रहण करे, यह अपेक्षा की जाती है ओ३म्।

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

दान सुची

श्री वीरसैन जी मुखी कीर्ति नगर, नई दिल्ली	11000/-
श्री बालकृष्ण जी, सत्यपाल जी, राजीव जी, सुधीर जी शर्मा बहा.	11000/-
श्री ओ.पी. गुप्ता जी अशोक विहार, फेज-1, दिल्ली	5100/-
पंघाल फिटनस गुरुग्राम हरियाणा	3100/-
श्रीमती रामदुलारी बंसल वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़	2000/-
श्री रविन्द्र कुमार जी चड्ढा द्वारका नई दिल्ली	7000/-
श्री रामभज जी नेहरा, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	5100/-
श्री लक्ष्मी देवी जी कटारिया विकासपुरी, दिल्ली	2200/-
श्री सुरेन्द्र जी सुपुत्र श्री राणा राठी जी 7 विश्वा बहादुरगढ़	2100/-
श्री सुबे सिंह जी भारद्वाज दयानन्द नगर बहादुरगढ़	2100/-
श्री सौरव वर्मा जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़	2100/-
श्री धर्मसिंह जी सुपुत्र श्री रामगोपाल जी छावला नई दिल्ली	1700/-
श्री तुषार जी गुलिया काठमण्डी बहादुरगढ़	1100/-
लालराम किशनदास एण्ड संस (वेदप्रकाश जी लोहिया) बहा.	1100/-
मा.राकेश जी सु. श्री महेन्द्र सिंह जी, गढ़ी सांपला	1100/-
वानप्रस्थी श्री जयदेव जी हसीजा गुरुग्राम हरियाणा	1100/-
श्री अश्विनी कुमार जी आर्य उत्तम नगर, दिल्ली	1000/-
श्री कर्नल राजेन्द्र जी सहरावत सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
मेघाली सुपुत्री, श्री बिजेन्द्र जी, पाराशर बराही रोड, बहा.	1000/-
श्रीमती रेनी चड्ढा जी टैगोर गार्डन दिल्ली	500/-

गेहूं

श्री सूबे जी प्रधान परनाला बहादुरगढ़	1 बोरी गेहूं
श्री भगवान जी कबीर मन्दिर लाईनपार, बहादुरगढ़	1 बोरी गेहूं
श्री पं. राजकुमार जी परनाला बहादुरगढ़	50 किलो गेहूं
श्री देवेन्द्र जी राठी सुपुत्र श्री कंवल सिंह जी राठी परनाला	1 बोरी गेंहूं
श्री राजपालसिंह जी सु. श्री सुल्तान सिंह जी ग.सा.	50 किलो गेहूं
श्री महेन्द्र सिंह जी सुपुत्र श्री मुंशीराम जी ग.सा.	50 किलो गेहूं

बहादुरगढ़ से अन्न प्राप्त

कैलाश जी लखोटिया मॉडल टाऊन	50 किलो
मनुदेव जी शास्त्री सैक्टर-2,	1 बोरी गेहूं
श्री श्यामलाल जी गुप्ता	2 बोरी
लाला धनश्यामदास (धनु)	1 बोरी गेहूं
सुरेन्द्र जी दाँगी एम.सी.	1 बोरी गेहूं
बनारसीदास फकीर चंद	1 बोरी गेहूं
बनारसी दास जुगला किशोर	1 बोरी गेहूं
बिहारी लाल राजेन्द्र प्रसाद जैन	50 किलो आटा
रोशन लाल सुपुत्र श्री ज्ञानचन्द	1 बोरी गेहूं
मातुराम जी जयप्रकाश	50 किलो गेहूं
लालराम किशोर जी बंसल (मैघराज चन्द्रभान)	1 बोरी
राधेश्याम अशोक कुमार	1 बोरी
हरद्वारी लाल रोशन लाल	40 क़िलो
यूगर्ग ट्रेडिंग कंपम्नी	1 बोरी
विक्की मित्तल	50 किलो
लाला प्रताप सिंह संतकिशोर	50 किलो
रतन सिंह सोनी जी	50 किलो
रविन्द्र कुमार जी	1 बोरी
मांगेराम किशोर लाला	50 किलो
हीरालाल वृकभान	50 किलो
श्योप्रसाद विकास	900
धामडियां	25 किलो चावल
अग्रवाल ट्रेडिंग कम्पनी	50 किलो गेहूं
डी.डी. बंसल जी खादवाले	50 किलो गेहूं
श्री नवीन जी वाही	1800
श्री भगवान जी कबीर मन्दिर लाईनपार बहादुरगढ़	1 बोरी गेहूं
श्री राज सिंह राठी जी दयानन्दनगर बहादुरगढ़	3 बोरी
मा. जय सिंह जी दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	1 बोरी गेहूं
श्री दयाकिशन जी राठी, 8 विश्वा बहादुरगढ़	1 बोरी गेहूं
श्री दलवीर सिंह जी सुपुत्र श्री कबूल सिंह जी सैक्टर-2, बहा.	1950/-

गौशाला हेतु दान

श्रीमती भगवती जी लाईनपार बहादुरगढ़	1100/-
श्री अजय सिंह जी दलाल धर्मपुरा बहादुरगढ़	1100/-
श्री वीरेन्द्र सिंह जी नांगलोई दिल्ली	500/-
श्री विनय जी महेश्वरी मॉडल टाऊन बहादुरगढ़	1100/-
श्री महेन्द्र अग्रवाल सुपुत्र श्री शम्भुदलाल जी अनाजमण्डी बहा.	1100/-
श्रीमती प्रकाशवती वशिष्ट सोनीपत हरियाणा	5100/-
श्री महेन्द्र जी शर्मा सुपुत्र श्री सोवरनदत्त शर्मा बहादुरगढ़	1100/-

विविध वस्तुएं

श्री सुबे जी प्रधान परनाला बहादुरगढ़	25 किलो सरसो तेल
श्री दीपेन्द्र जी डबास शनि मन्दिर, टीकरी कलां दिल्ली	1 टीन सरसो तेल

विशिष्ट भोजन एक समय का

श्री रामकुमार जी छिकारा सैक्टर-6, बहादुरगढ़

कैप्टन महेन्द्र सिंह जी पवार अमेरिका वाले

श्री दीपक जी जैन सन्त कॉलोनी बहादुरगढ़

श्री भूपेन्द्र सिंह जी रोहिल्ला सैक्टर-9, बहादुरगढ़

श्री सुबोध जी शर्मा रामनगर, बहादुरगढ़

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 जून 2018 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

1000
चौ. अजीत सिंह जी चहार
जे.ई. झज्जर, हरियाणा

1001
श्री रूपेश जी जैन
सुपुत्र श्री स्व. राजेन्द्र प्रसाद जी
जैन अनाजमण्डी, बहादुरगढ़

1002
श्री अश्विनी कुमार जी आर्य
सुपुत्र श्री विद्यासागर जी
उत्तम नगर, नई दिल्ली

1003
श्रीमती कुसुम जी गुप्ता
श्री रामाभारती पब्लिक स्कूल
बहादुरगढ़

1004
डॉ. वीरेन्द्र जी भारद्वाज
वत्स कॉलोनी, बहादुरगढ़

1005
श्री राजेन्द्र जी छिकारा
इंडियन हाई स्कूल, लाईनपार
बहादुरगढ़

1006
श्री सतीश जी सेठी
सेठी रेफ्रीजरेशन, नाहरा,
नाहरी रोड, बहादुरगढ़

1007
श्री वीरेन्द्र जी दलाल
एम.आई.ई. मामा चौक,
बहादुरगढ़

1008
श्री देवेन्द कुमार जी
मामा चौक, एम.आई.ई.
बहादुरगढ़

1009
श्री यशपाल जी
गांधी रेलवे रोड, बहादुरगढ़

1010
श्री बी.के. लवकेश जी
सैक्टर-6, बहादुरगढ़

1011
श्री अशोक कुमार जी जून
नूना माजरा, बहादुरगढ़

1012
श्री मनोज जी दलाल
सुपुत्र श्री भरपूर सिंह जी दलाल
मॉडल टाऊन, बहादुरगढ़

1013
श्री सतीशचंद जी संदुजा
धर्मपुरा, बहादुरगढ़

1014
श्री जयनारायण जी खुराना
मैन बाजार, बहादुरगढ़

1015
डॉ. रामकरण डबास
सुप्रसिद्ध समाजसेवी
सुपुत्र श्री भीमसिंह जी
माजरा डबास, दिल्ली

1016
श्री राजपाल जी तहलान
द्वारका, दिल्ली

1017
श्री रामचन्द्र जी फोगाट
बैंक कॉलोनी, बहादुरगढ़

1018
श्री कपूर चन्द्र जी
सुपुत्र श्री रामकिशोर जी बंसल
अनाजमण्डी, बहादुरगढ़

1019
श्री इन्द्रकुमार जी राठी
डी.एस. आर्य सीनियर सैकेण्डरी
स्कूल पटेल नगर, बहादुरगढ़

1020
श्री राजेन्द्र सिंह जी सैनी
ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल,
बहादुरगढ़

1021
श्री सुशील जी जैन
मामा चौक, एम.आई.ई.
बहादुरगढ़

1022
श्री श्यामलाल जी गुप्ता
काठमण्डी बहादुरगढ़

1023
श्री सुरेश जी गर्ग
एम.आई.ई, फेस-1,
बहादुरगढ़

आत्म - शुद्धि - पथ मासिक

जून 2018

छपी पुस्तक - पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2018-20

प्रेषक - आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में -

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

1024
श्री सत्यवीर सिंह जी फलसवाल
सुपुत्र श्री सरदार सिंह जी भदानी
झज्जर

1025
श्री रामनिवास जी छिल्लर
बाल विकास स्कूल,
बहादुरगढ़

1026
श्री सतीश जी आर्य
उत्तम नगर, नई दिल्ली

1027
श्री सुरेन्द्र जी राठी
सुपुत्र श्री राणा जी राठी
जटवाड़ा मोहल्ला, बहादुरगढ़

1028
श्री श्री निवास जी गुप्ता
रेलवे रोड, बहादुरगढ़

1029
श्री भीमसिंह सांगवान
न्यू ईरा स्कूल, नई बस्ती
बहादुरगढ़

1030
श्री सुरेन्द्र जी जून
सैक्टर-6, बहादुरगढ़

1031
श्री अजय कुमार जी रोहिल्ला
अजय स्टुडियो, बस स्टैण्ड,
बहादुरगढ़

1032
श्री सुकर्मपाल जी सांगवान
सैक्टर-6, बहादुरगढ़

1033
वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय
लाईनपार, बहादुरगढ़, झज्जर
हरियाणा

1034
श्री जे.के. अग्रवाल जी
एम.आई.एफ. फसे-1,
बहादुरगढ़

1035
प्रधान जी आर्य समाज मन्दिर
झज्जर रोड, बहादुरगढ़

प्रिय बन्धुओं! मास जून में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी जुलाई अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

\- व्यवस्थापक